सत्यमेव जयते

चेतना

बीसवाँ अंक

सितम्बर, 2008



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना

Scanned with AnyScanner

चेतना परिवार



बैठे हुए (बायें से दायें) श्री अतुल प्रकाश, सहायक महालेखाकार; मो० फैसल ईमाम, वरिष्ठ उप महालेखाकार; श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल, महालेखाकार (बिहार), पटना; श्री रमेश प्रसाद कंठ, कल्याण-अधिकारी-सह-उप महालेखाकार; श्री सुशील कुमार सिन्हा, उप महालेखाकार एवं श्री मुकेश कुमार लाल, सहायक महालेखाकार ।

खड़े हुए (बायें से दायें) श्री जॉर्ज सैमुएल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी (महालेखाकार के सचिव); श्री मनमीत कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी; श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, अनुभाग अधिकारी; श्री उमेश चौधरी, लेखा अधिकारी; श्री बिनोद प्रसाद साह; लेखा अधिकारी एवं श्री बंशीधर मिश्र, सहायक लेखा अधिकारी ।

Scanned with AnyScanner



चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

बीसवाँ अंक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
का कार्यालय महालेखाकार भवन,
वीर चन्द पटेल मार्ग, पटना–८००००१

Scanned with AnyScanner

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना।

प्रकाशन : **चेतना**

प्रकाशक : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का कार्यालय, महालेखाकार भवन, वीर चन्द पटेल मार्ग, पटना-800001

अंक : बीसवाँ
(सितम्बर 2008)

मूल्य : राजभाषा हिन्दी की अनवरत सेवा

मुद्रक : तन्या प्रेस, राजवंशी नगर, पटना-23
फोन : 2282217, मो0-9835490016

Scanned with AnyScanner

चेतना परिवार

संरक्षक :
श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति
श्री फैसल इमाम
वरिष्ठ उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री सुशील कुमार सिन्हा,
उप महालेखाकार, बिहार, पटना

श्री रमेश प्रसाद कंठ,
कल्याण अधिकारी–सह–उप महालेखाकार,
बिहार, पटना

प्रधान सम्पादक
श्री विनोद प्रसाद साह,
लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

सम्पादक मण्डल :
श्री मनमीत कुमार, सदस्य
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री उमेश चौधरी, सदस्य
लेखा अधिकारी

श्री बंशीधर मिश्र, सम्पादक
सहायक लेखा अधिकारी,हिन्दी कक्ष

श्री उपेन्द्र प्रसाद सिंह, सदस्य
अनुभाग अधिकारी
श्री राजेन्द्र कुमार, सदस्य
अनुभाग अधिकारी (प्र0), हिन्दी कक्ष

Scanned with AnyScanner

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ सं0
1.	चेतना परिवार			3
2.	अनुक्रमणिका			4
3.	महालेखाकार का संदेश			6
4.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन,लेखा एवं वी0 एल0 सी0) का संदेश			7
5.	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश			8
6.	कल्याण अधिकारी-सह-उप महालेखाकार (जी0 ई0 एवं निधि) का संदेश			9
7.	सम्पादकीय			10
8.	आपके पत्र			12
9.	महालेखाकार कार्यालय में हिन्दी रिपोर्ट, हिन्दी कक्ष की गतिविधियाँ -2007-2008			15
10.	'जीवन का सुख'	प्रेरक लघु निबंध	श्री बंशीधर मिश्र, सहायक लेखा अधिकारी	17
11.	"बेचारा रामू काका"	कहानी	श्री उमेश चौधरी, लेखा अधिकारी	18
12.	"प्रदूषण"	लघु निबंध	स्वाति सौरभ	20
13.	"भारत का उत्थान" -	लघु निबंध	स्वाति सौरभ	21
14.	"सोचा था"	कविता	श्री ब्रजमोहन प्रसाद, वरिष्ठ लेखाकार	22
15.	'भिक्षुणी की नागरिकता'	कहानी	श्री रामाधार राय, वरिष्ठ लेखाकार	23
16.	'संचार-क्रांति' - एक दृष्टि	निबंध	श्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डे, सहायक लेखा अधिकारी	27
17.	'अपना नहीं रहा अपना'	निबंध	श्री दयानन्द प्रसाद, वरिष्ठ लेखाकार	29
18.	"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"	कहानी	अश्विन अनुराग	31

Scanned with AnyScanner

क्र.सं.	विषय	रचना	लेखक	पृष्ठ सं0
19.	'एक अहंकार' – दुर्गुण हजार	लघु निबंध	शुभम्	33
20.	'प्राणायाम'– एक अनुभव	अनुस्मरण	श्री राजेन्द्र कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	34
21.	'माँ का अर्शीवाद'–	कहानी	श्री हरेराम प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार	38
22.	'शिर्जी के महाराज' –	एक संस्मरण	श्री अनिसद्ध राय, पर्यवेक्षक	40
23.	''ऐसा क्यों ?''	कविता	श्री आशा नन्द ठाकुर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	42
24.	''दुल्हन''	कविता	प्रिया राज	43
25.	''यह आपने क्या कर डाला संपादक जी	हास्य व्यंग	श्री श्रीराम पाण्डेय, अनुभाग अधिकारी	44
26.	'' माँ''	कविता	श्री गौरव आन्नद	46
27.	''आज का सिनेमा''	कविता	श्री गौरव आन्नद	47
28.	''जिन्दगी एक पल है''	कविता	श्री यतीश चन्द्र वर्मा, अनुभाग अधिकारी	48
29.	''राष्ट्रीय''	कविता	श्री अशुतोष झा, वरिष्ठ लेखाकार	49
30.	''हम युवा''	कविता	श्री रंजन कुमार, लेखाकार	50
31.	''भिक्षुक''	कविता	श्री विधू शेखर	51
32.	एक अविस्यरणीय यात्रा	संस्मरण	श्री चन्द्र शेखर	52
33.	''दर्द औरो का मुझसे सहा नहीं जाता''	कविता	श्री शिव शंकर तिवारी, वरिष्ठ लेखाकार	53
34.	'घृतकुमारी'	घरेलू चिकित्सा	श्री रामेश्वर राम, वरिष्ठ लेखाकार	54
35.	बिहार का गौरवमय इतिहास,	ऐतिहासिक रचना	श्री संदीप कुमार	56
36.	कुछ पेड़ लगा लो,	कविता	श्री सुनील कुमार वर्मा, लेखा अधिकारी	58
37.	'सपना'	कहानी	श्री मनमीत कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	59
38.	'अगस्त का पेड़'	घरेलू चिकित्सा	श्री रामेश्वर राम, वरिष्ठ लेखाकार	61
39.	हिन्दी पखवारा समारोह 2007			62

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ, रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं। रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –प्रधान सम्पादक

Scanned with AnyScanner

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना का संदेश



मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि कार्यालयीय हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 20वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इसके प्रकाशन के लिए लेखकों, सम्पादक मंडल एवं पाठकों को समरूप से बधाई।

'चेतना' अपने शाब्दिक प्रयायः में न केवल जागृति सूत्र के रूप में, कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सोंच एवं अभिव्यक्ति का जीवंत प्रयास है। यह पत्रिका सम्प्रेषण, सहभागिता, वैचारिक अभिव्यक्ति एवं कार्यपरक जानकारी जैसे जीवन के बहुआयामी पक्षों में हिन्दी के प्रति हमारी निष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण है। वस्तुतः, हिन्दी के सर्वांगीण विकास के लिए सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करना हम सबों का कर्तव्य है।

मैं कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हिन्दी के उत्थान के लिए सतत् एवं प्रभावकारी कारक सिद्ध हो। मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल, रचनाकारों एवं परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम एवं अपार निष्ठा के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ तथा इसके चतुर्दिक विकास की हार्दिक कामना करता हूँ।

(इन्द्रदीप सिंह धारीवाल)
महालेखाकार (ले0 एवं ह0)
बिहार, पटना।

Scanned with AnyScanner



वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं भी0एल0सी0), बिहार, पटना का

संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के बीसवें अंक के प्रकाशन पर मुझे दिली खुशी हो रही है।

पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं। आशा है, यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहन प्रदान करने में प्रेरक भूमिका निभाएगी ।

आखिर में, मैं पत्रिका की अहर्निश प्रगति के लिए, उसके निरन्तर प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

फैसल इमाम
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(लेखा एवं भी0एल0सी0)

Scanned with AnyScanner



वरिष्ठ उप महालेखाकार (पेंशन), बिहार, पटना का

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के बीसवें अंक का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास में एक सराहनीय कदम है।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए चेतना परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकर बधाई के पात्र हैं। उन्हें मेरी हार्दिक बधाई ! आशा है, सरकारी कामकाज में हिन्दी को इससे प्रोत्साहन मिलेगा और हमलोग अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिक-से-अधिक प्रयोग करके इसके विकास में अपना योगदान देंगे।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य एवं सतत् प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

सुशील कुमार सिन्हा
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(पेंशन)

Scanned with AnyScanner



कल्याण अधिकारी–सह–उप महालेखाकार (जी० ई० एवं निधि) का

संदेश

इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के बीसवें अंक के प्रकाशन से मुझे अतिशय प्रसन्नता हो रही है।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ स्तरीय, ज्ञानवर्धक तथा रोचक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए यह प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के संपादक मंडल, सभी रचनाकार एवं प्रकाशन से जुड़े लोग बधाई के पात्र हैं। उन सबों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पत्रिका की अविरल प्रगति एवं अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी बहुत–बहुत मंगल कामनाएँ ।

रमेश प्रसाद कंठ
कल्याण अधिकारी–सह–उप महालेखाकार
(जी०ई० एवं निधि)

Scanned with AnyScanner

सम्पादकीय.....

हिन्दी दिवस पर हार्दिक शुभकामनाओं के साथ इस कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के बीसवें अंक को सहृदय एवं हिन्दी प्रेमी पाठको के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सर्वांगीण विकास के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है । सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की जाती रही है । पत्रिका के समुन्नत विकास के लिए हम सदैव प्रयत्नशील हैं । तीव्र गति एवं वेग से हो रहे तकनीकी विकास के कारण प्रतिदिन नये शब्दों का प्रचलन एवं प्रयोग किया जा रहा है । हिन्दी के विकास के लिए यह आवश्यक है कि हम विश्व के अन्य भाषाओं के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना सीखें ताकि अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हमारी हिन्दी भी शान से अपनी गरिमा एवं गौरव का स्थान पा सके ।

पिछले 59 वर्षों में राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी की प्रगति सराहनीय रही है, परन्तु लक्ष्य प्राप्ति के दृष्टिकोण से पूर्णतः संतोषप्रद नहीं रही है । हम शायद यह भूल जाते हैं कि भाषा का विकास उसके अधिकाधिक व्यवहार से होता है न कि सिर्फ यह कहते रहने से कि हमें हिन्दी के विकास के लिए अमुक-अमुक बातें करनी है। अतः यह आवश्यक हैं कि प्रतिदिन हिन्दी बोलनें, पढ़ने और लिखने की आदत निःसंकोच रूप में डाली जाय।

अतः आज 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम अपना सारा सरकारी कार्य राजभाषा हिन्दी में ही करेंगे। साथ ही यह भी संकल्प लें कि हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु पुनः आत्मसमीक्षा/आत्मचिंतन करें ताकि राजभाषा पूर्णतः विकसित हो। इसके लिए मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाईयों को दूर करने पर गंभीरता से सोचेंगे।

पूर्व के अनुरोध को दुहराते हुए इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हमारा यह अनुरोध है कि वे अपनी रचनायें-कथा, संस्करण, लेख,निबन्ध,कविता तथा कार्यालय के कार्य-कलाप से संबंधित रचनायें प्रत्येक माह नियमित रूप से 'हिन्दी कक्ष' को देते रहें ताकि

Scanned with AnyScanner

पत्रिका अपने लक्ष्य (त्रैमासिक) को प्राप्त कर सके एवं हमारे सहृदय पाठक लाभान्वित हो सकें । अधिकाधिक उपयोगी एवं ज्ञानबर्द्धक रूप प्रदान करने के लिए हमारा सम्यक प्रयास आवश्यक है ।

आदरणीय पाठकों से भी सादर अनुरोध है कि पत्रिका के बारे में अपने विचार, सुझाव एवं मार्ग दर्शन हमें बेझिझक सूचित करें । इसके अलावें इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं रोचक बनाने में अपनी रचनाओं से इसे सुशोभित करने की महती कृपा करने का कष्ट करें । हम उनकी सहयोगपूर्ण सहभागिता के लिए अनुगृहित रहेंगे ।

अंत में हिन्दी के प्रेमी एवं विद्वान संरक्षक माननीय महालेखाकार श्री इन्द्रदीप सिंह धारीवाल तथा परामर्शदातृ समिति, सम्पादक मण्डल के सदस्यों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ , जिनके अपार स्नेह के आलोक में यह पत्रिका पहले से ज्यादा अलंकृत रूप में प्रकाशित है । पत्रिका के सुन्दर चित्रांकन एवं सफल प्रकाशन के लिए श्री अजीत कुमार सिन्हा, सहायक लेखा अधिकारी का सहयोग भी प्रशंसनीय है । 'चेतना परिवार 'की ओर से उन्हें कोटि-कोटि धन्यवाद । यह मेरे सेवा काल की प्रथम संपादकीय कार्य है, इसलिए भूल के लिए क्षमा याचना व्यक्त करते हुए सभी पाठको और रचनाकारों को हृदय से बधाई ।

जय हिन्द,जय हिन्दी ।

बंशीधर मिश्र

Scanned with AnyScanner

आपके पत्र

आपके कार्यालय से प्रकाशित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के उन्नीसवाँ अंक की एक प्रति प्राप्त हुआ, पत्रिका के लिए धन्यवाद ।

'चेतना' में समाहित सभी सामग्री उत्तम, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं । पत्रिका के संपादक मण्डली सराहना के पात्र हैं जो पत्रिका को बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक रूप में साज सँवार कर पाठकों को प्रस्तुत किया है । पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी ढेर सारी शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष
कार्यालय, महालेखाकार
(प्राप्ति, निर्माण एवं स्थानीय निकाय लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल

कोलकता,
दिनांक 20.02.2008

❑❑❑

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का 19 वाँ अंक हमारे कार्यालय में प्राप्त हुआ । राजभाषा हिन्दी का गौरव एवं स्वाभिमान अपने पृष्ठों पर सहेजे संजोए यह अंक समकालीन रचनात्मकता को भी रेखांकित करता है । पत्रिका में संग्रहित सामग्री भाषा के महत्व पर प्रकाश डालती है ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं स्वीकार करें ।

वरीय लेखा अधिकारी/हि0अ0
कार्यालय, महालेखाकार (ले0एवं ह0)
प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

इलाहाबाद
दिनांक–30/1/08

❑❑❑

हिन्दी पत्रिका ''चेतना'' के 19वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका इसी प्रकार निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे ऐसी हमारी कामना है ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय, वरिष्ठ उप–महालेखाकार
(लेखा एवं ह0), सिक्किम

गंगटोक
दिनांक–03/3/08

❑❑❑

आपके द्वारा प्रेषित आपकी गृह पत्रिका ''चेतना'' का 19 वॉ अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद ।

पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ सुपाठ्य एवं ज्ञानवर्धक हैं ।
पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं के साथ ।

हिन्दी अधिकारी,
हिन्दी कक्ष,
महालेखाकार का कार्यालय
(लेखा एवं हक0), आन्ध्रप्रदेश

हैदराबाद
दिनांक–30/1/08

❑❑❑

Scanned with AnyScanner

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 19 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट आशा से निराशा, कौन जीता कौन हारा और आयुर्वेदिक दवाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं । इसके साथ ही सभी रचनाएँ पठनीय एवं रोचक हैं । आपकी पत्रिका हिन्दी की प्रगामी प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी। पत्रिका मंडली की सृजनात्मक प्रतिभा के लिए बधाई एवं हिन्दी के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(सिविल लेखा परीक्षा),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

चेन्नै
दिनांक–17/1/08

❑❑❑

हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के 19 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में छपी रचना ''फैलाव के बीच संकुचन'' एवं कविता ''भाग्य का निर्माण कर्म सें ''बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्धक लगे ।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएं ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल
प्रदेश का कार्यालय

शिमला
दिनांक–4/2/08

❑❑❑

आपके कार्यालय की त्रैमासिक पत्रिका ''चेतना'' का 19वॉं अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद ।

पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं राजभाषा गतिविधियों से संबंधित सभी छाया चित्र सुन्दर व आकर्षक हैं। पत्रिका में समाविष्ठ रचनायें पठनीय व रोचक हैं तथा चुटकुले पाठक मन को गुदगुदाते हैं । श्री नरेन्द्र सिंह नाहर का लेख 'महाकवि विद्यापति' साहित्यिक लेख है । श्री रामाधार राय की कहानी 'कौन जीता कौन हारा ' मर्मस्पर्शी कथा है। इंसान से अधिक समझदारी व प्यार जानवरों में होता है, यह कहानी दर्शाती है । श्री दीपक दयाल प्रसाद की कविता 'भाग्य का निर्माण कर्म से ' प्रशंसनीय रचना है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभ कामनाएं ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी,
राजभाषा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रथम, मध्य प्रदेश का कार्यालय

ग्वालियर
5/2/08

❑❑❑

Scanned with AnyScanner

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'चेतना' का 19वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में निहित सभी रचनायें रोचक एवं पठनीय हैं । श्री रामेश्वर राम का लेख 'आयुर्वेदिक दवाएं' जानकारीवर्धक हैं । सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को पत्रिका के श्रेष्ठ प्रकाशन एवं सुन्दर संयोजन के लिए बधाई । पत्रिका की निरन्तर प्रगति के लिए इस कार्यालय की तरफ से शुभकामनाएं ।

प्रवर लेखा अधिकारी,
हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), पंजाब

चण्डीगढ
दिनांक–4/2/08

□□□

आपके पत्र के साथ पत्रिका 'चेतना के 19 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद ।

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि आपके कार्यालय की यह पत्रिका बहुत ही आकर्षक एवं सराहनीय है । आशा है भविष्य में यह पत्रिका और भी आकर्षक एवं सराहनीय होगी । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हमारी शुभकामनाएँ ।

शुभेच्छा सहित

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी)
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), प0 बंगाल

कोलकाता
दिनांक–1/2/08

□□□

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''चेतना'' का 19 वाँ अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका भेजने हेतु धन्यवाद । पत्रिका में कविता 'भाग्य का निर्माण कर्म से' बहुत ही रुचिकर है । सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभाशीष ग्रहण करें ।

कल्याण अधिकारी,
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार
(सिविल आडिट), उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद
दिनांक –25/1/08

□□□

Scanned with AnyScanner

कार्यालय, महालेखाकार (ले0एवं ह0), बिहार, पटना में हिन्दी गतिविधियाँ-2007-08

भारत सरकार,गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सरकारी काम काज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढावा देने के लिए हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिसमे हिन्दी के प्रयोग के लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं तथा इन्हीं लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु विभिन्न कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है । इस वर्ष महालेखाकार (लेखा एवं ह0),बिहार, पटना के कार्यालय ने अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में जो प्रगति की है, उसका विवरण निम्नलिखित है :-

1. राजभाषा अधिनियम 3(3) का अनुपालन-

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत कुल 603 दस्तावेज जारी किये गये जिनमें हिन्दी में 603 तथा द्विभाषी में शून्य थे । कोई भी आदेश केवल अंग्रेजी में जारी नहीं किया गया ।

2. हिन्दी पत्राचार :-

वर्ष 2007-08 के दौरान इस कार्यालय में हिन्दी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या 1,30,186 थी जिनमें से 79,582 के उत्तर हिन्दी में भेजे गये। शेष पत्रों के उत्तर अपेक्षित नहीं थे । कार्यालय द्वारा भेजे गए कुल पत्रों की संख्या 79,903 थी । कुल भेजे गये पत्रों में से हिन्दी पत्रों की प्रतिशतता 99.6 थी ।

3. राजभाषा कार्यान्वयन समिति :-

उक्त वर्ष में रा0का0स0 की नियमित तिमाही बैठके सम्पन्न हुई । नियमतः वर्ष के दौरान 4 बैठकें आयोजित की गई जिनमें राजभाषा के कार्यक्रम एवं नीतियों के कियान्वयन पर विचार-विमर्श कर अधिकांश निर्धरित लक्ष्यों की पूर्ति की गई ।

4. हिन्दी कार्यशाला :-

इस वर्ष इस कार्यालय में 8 हिन्दी कार्यशालाएँ चलाई गई जिनमें कार्यालय के 52 अधिकारियों /कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया ।

5. हिन्दी पुरस्कार योजना :-

वर्ष 2007 में इस कार्यालय के 12 अधिकारियों / कर्मचारियों को हिन्दी पुरस्कार योजना के अन्तर्गत् मूल टिप्पण एवं आलेखन के लिए हिन्दी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । यह पुरस्कार 'हिन्दी दिवस' के पावन अवसर पर प्रदान किया गया ।

6. हिन्दी पखवारा समारोह का आयोजन :-

Scanned with AnyScanner

इस कार्यालय में वर्ष 2007 के दौरान 01 सितम्बर,2007 से 14 सितम्बर 2007 तक हिन्दी पखवारा समारोह का वृहत आयोजन किया गया। पखवारा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा-हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता तथा कम्पयूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित की गयी । विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष्य में पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया । 'हिन्दी दिवस' के सुअवसर पर 'कवि गोष्ठी' भी आयोजित की गई तथा हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के उन्नीसवें अंक का लोकार्पण भी किया गया ।

7. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति :-

इस कार्यालय ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दो छमाही बैठकों में भाग लिया । बैठकों में इस कार्यालय ने राजभाषा कार्यक्रम एवं नीतियों के कार्यान्वयन की समीक्षा में अपने विचार व्यक्त किये । इस कार्यालय ने राजभाषा के वार्षिक कार्यक्रम के अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की सूचना समिति को दी ।

8. हिन्दी शिक्षण योजना :-

इस कार्यालय में अधिकारियों /कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी के ज्ञान की स्थिति बहुत अच्छी है । यहाँ 86 अधिकारी एवं 478 कर्मचारी हैं जिन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है । यहाँ सभी हिन्दी में ही कार्यालय का कामकाज करते हैं । इस कार्यालय में 07 आशुलिपिक हैं जो हिन्दी में प्रशिक्षित हैं । यहाँ 21 टंकक हैं जिनमें 18 हिन्दी में प्रशिक्षित हैं ।

9. हिन्दी पुस्तकों की खरीद :-

इस कार्यालय में 2007-08 के दौरान पुस्तकों के क्रय पर कुल 26,247 रू व्यय किया गया जिसमें से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर 11,457 रू व्यय किया गया।

10. हिन्दी टिप्पण :-

इस कार्यालय में लगभग शत प्रतिशत हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन किया जाता है । वर्ष 2007-08 के दौरान इस कार्यालय में कुल 26,224 फाइलें खोली गई जिनमें 25,175 फाइलों में हिन्दी में टिप्पणियाँ लिखी गई ।

इस प्रकार इस कार्यालय ने कुछ लक्ष्यों को छोड़कर वार्षिक कार्यक्रम के अधिकतम लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है । अतः राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए समीक्षा की जाती रही है । आशा है, आगामी वर्षों में शत-प्रतिशत लक्ष्यों की पूर्ति हो सकेगी।

Scanned with AnyScanner

जीवन का सुख (प्रेरक लघु निबन्ध)

श्री बंशीधर मिश्र,
सहायक लेखा अधिकारी

''जीवन का सुख'' मानव जीवन में सबको नसीब नहीं होता । इस धरती पर तरह-तरह के स्वभाव के आदमी हैं । ज्यादातर वैसे आदमी हैं जो स्वार्थ से सर्वथा युक्त हैं अर्थात् स्वार्थ ही उसके लिए सबकुछ है । यह सर्वविदित तौर पर कहा जाता है कि अपना पेट तो कुत्ता भी पाल लेता है तो इन्सान क्या चीज है! जीवन के सच्चे सुख की अनुभूति वहीं पर है जहाँ आदमी औरों के काम आ सके।

''दधिचि'' मुनि को कौन नहीं जानता । उन्होंने अपने शरीर से प्राण का त्याग कर अपनी हड्डियों को देवताओं को अस्त्र-शस्त्र के लिए दान कर दिया था । उस स्थिति में भी अपना प्राण त्यागते समय भी दधिचि को सच्चा सुख मिला होगा ।

आज के युग में भी यह बात सर्वथा चरितार्थ है कि स्वार्थ में जीने वाले आदमी को जीवन के किसी-न-किसी मोड़ पर ऐसा समय देखने को मिल जाता है जब औरों की जरूरत उसे महसूस होने लगती है ।

कहा भी गया है-
''क्या मार सकेगी मौत उसे
औरों के लिए जो जीता है।
मिलता है जहाँ का प्यार उसे
औरो के लिए जो आँसू पीता है।।''

जीवन की सार्थकता,जीने का बहाना, जीवन का सुख आदि के लिए यह आवश्यक हे कि आदमी एक उद्देश्य को लेकर चले जिसमें उसके द्वारा किये गये प्रयासों का फल स्वयं को सच्चे सुख के साथ जीने के बहाने के साथ-साथ औरो के जीने का सहारा हो । ●

Scanned with AnyScanner

बेचारा रामू काका



श्री उमेश चौधरी,
लेखा अधिकारी

मेरे गाँव में रामू काका का एक परिवार रहता था। उस परिवार से मेरा बहुत गहरा रिश्ता था। यह रिश्ता खून का नहीं, आत्मीयता एवं मानवीयता का था। मेरा उठना-बैठना उस परिवार से हमेश लगा रहता था। परिवार के सभी लोग आपस में मिलजुलकर खुशीपूर्वक रहते थे ।

रामू काका तीन भाईयों में सबसे बड़े थे। उनके दोनो भाईयों के बच्चों से परिवार गुलजार था। रामू काका बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे । उनका संबंध साधू संतों से ज्यादा रहता था। किसी धार्मिक मत से प्रभावित होकर उन्होंने अविवाहित रहने का मन बना लिया था । परिवार के सदस्यों तथा कुछ ग्रामीणों के काफी समझाने पर भी वे शादी के लिए राजी नहीं हुए।

रामू काका का परिवार एक अच्छे किसान थे । उनके पास करीब साठ एकड़ जमीन था । जमीन भी काफी उपजाउ थी । चूँकि रामू काका का अपना परिवार नहीं था, इसलिए उनके दोनों भाई, उनकी पत्नियाँ तथा बच्चे उनका काफी ख्याल रखा करते थे । उनके खान-पान की व्यवस्था, उनका देखभाल आदि पर विशेष ध्यान रखा जाता था । रामू काका भी काफी खुश थे । उनको कभी यह एहसास नहीं होता था कि उनका अपना परिवार या बाल-बच्चा नहीं है । पूरा परिवार ही उनको अपना नजर आता था। दोनों भाई भी अपने पत्नियों एवं बच्चों को हिदायत दे रखे थे कि उन्हें किसी तरह की दिक्कत नहीं होनी चाहिए ।

परिवार की गाड़ी खुशी-खुशी चल रही थी, तभी इस परिवार पर किसी की बूरी नजर लग गई । रामू काका के एक पुराने साधू मित्र जो अब उसी गाँव के ठाकुरबाड़ी का महंथ बन चुका था, एक दिन उनसे मिलने उनके घर आया । महंथ रामू काका को ठाकुरबाड़ी ले आया । वहाँ उनका भरपूर स्वागत किया गया । उन्हे अच्छे-अच्छे पकवान परोसे गए । रामू काका भी काफी खुश थे । महंथ जी रामू काका से अध यात्म और धर्म की चर्चा करते-करते दुनियादारी पर उतर आये । उन्होंने रामू काका को समझाना शुरू किया -"देखो रामू तुम्हारे अपने कोई परिवार, बाल-बच्चे नहीं हैं। तुम ईश्वर में आस्था रखने वाले व्यक्ति हो । तुम्हारे दोनों भाई बहुत ही लोभी प्रवृति के हैं । वे तुम्हारे हिस्से का जमीन-जायदाद लेने के लिए ही तुम्हारा देखभाल करते हैं । महंथ ने सलाह दिया तुम अपने हिस्से का जमीन ठाकुरबाड़ी के नाम लिख दों । इससे तुम्हारा नाम अमर हो जायगा । ठाकुर जी तुम पर प्रसन्न रहेगें तथा तुम्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी । तुम चाहो तो ठाकुरबाड़ी में ही अपना शेष जीवन बिता सकते हो । यहाँ तुम्हें किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी । तुम्हारी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखा जायगा । तुम्हारा देखभाल करने के लिए दो-चार आदमी लगा दिए जायेगें। इस तरह से महंथ जी रामू काका को काफी प्रलोभन दिया, लेकिन सबकुछ सुनने के पश्चात भी रामू काका पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे महंथ जी की बात को अनसुनी कर दिए। रामू काका की स्थिति देखकर महंथ जी बेचैनी महसूस करने लगे। उनको लग रहा था कि रामू काका पर उनकी बात का कोई असर नहीं हो रहा है। महंथ जी कुछ देर के लिए चुप हो गए और कुछ सोचने लगे।

Scanned with AnyScanner

सोचते-सोचते वे बाहर निकल गए और अगले ही पल तीन-चार लठैतों को लेकर अन्दर प्रवेश किए। जो काम मान-मनौवल से नहीं हो रहा था वह काम अब लाठी के बल से करवाने की बात की जा रही थी। रामू काका यह सब देख कर स्तब्ध रह गए। वे कभी सोचे भी नहीं सकते थे कि साधू रूप में यह महंथ इतना बड़ा गुंडा निकलेगा। धन के लोभ में मित्र के साथ मित्रवत् व्यवहार न कर पशुवत् व्यवहार करेगा। महंथ ने एक सादा कागज रामू काका के तरफ बढ़ातें हुए उस पर अँगूठा का निशान लगाने को कहा रामू काका मृत्यु को सामने देखकर उसके कथनानुसार अगुंठा का निशान लगा दिए और किसी तरह वहाँ से भाग खड़े हुए। घर पहुँचने पर अपने साथ घटी पूरी वृतांत उन्होंने अपने भाईयों को सुनाया। सभी लोग सुनकर दंग रह गए। लेकिन उनके भाईयों के मन में यह आशंका जरूर होने लगा कि रामू काका के हिस्से की जमीन अब हमलोगों को न मिलकर किसी और को मिल जायेगा । उस घटना के बाद दोनों भाईयों ने विचार किया कि क्यों नहीं उनके हिस्से का जमीन-मकान अपने नाम करा लिया जाय। अब दोनों भाई उनपर दवाब बनाने लगे कि वे अपने हिस्से का जमीन उनलोगों के नाम कर दे । रामू काका अनपढ़ जरूर थे लेकिन दुनियादारी का अनुभव उन्हें बहुत था । वे अपने भाईयों से कह चुके थे कि जिन्दा रहते किसी को अपना उत्तराधिकारी बनाना नहीं चाहते हैं । लेकिन, दोनो भाई महंथ के द्वारा किए गए जोर-जबरदस्ती तथा सादे कागज पर अँगूठा का निशान ले लिए जाने से आशंकित थे । वे सोचते रहते थें कि कही महंथ के आदमी उनकी जमीन पर कब्जा न कर ले । इसलिए, वे लोग हर प्रकार से रामू काका पर दवाब डालकर उनके हिस्से की जमीन को अपने नाम करवा लेना चाहते थे । रामू काका सबकुछ समझते हुए उनके दवाब से झुक गए और एकदिन उन्होंने अपने हिस्से का जमीन-जायदाद अपने भाईयें के नाम कर दिया । फिर वही हुआ जिसका डर उन्हें पहले से था । धीरे-धीरे परिवार के सदस्यों का व्यवहार बदलने लगा । जो लोग पहले रामू काका के प्रति आदर-सत्कार का भाव रखते थे, उसमें अब दुत्कार और निरादर का भाव झलकने लगा। उनके आगे रुखा-सुखा खाना परोसा जाने लगा । परिवार के अन्य सदस्यों एवं उनमें विभेद साफ नजर आने लगा । दोनों भाई भी उनके प्रति पहले जैसा व्यवहार नहीं कर रहे थे । उनकी पत्नियाँ तथा बच्चे रामू काका के साथ कैसा व्यवहार कर रहे है, इसके बारे में जानकारी लेना भी वे जरूरी नहीं समझते थे । घर में मेहमान के आने पर अच्छे-अच्छे पकवान बनते थे लेकिन रामू काका को वह भी नसीब नहीं होता था । अब रामू काका को महंथ जी की बात याद आने लगी । कभी-कभी वे सोचते थे कि मंहथ जी ही सही थे, लेकिन महंथ ने जो रास्ता अपनाया था वह गलत था । रामू काका अब अन्तर्द्वन्द्व में फंस गए । उनके सामने शेष बची जिन्दगी को जीने का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था । उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति दिनोदिन बिगड़ती जा रही थी । वे सोच रहे थे कि जमीन-जायदाद का लोभ मनुष्य को अपनों से अलग कर देता है । पिछली सारी बातें यादकर वे सोचनें लगते थे कि उनके प्रति किया गया सभी अच्छा व्यवहार स्वार्थ से प्रेरित था । उनके मन में यह बात भी आती थी कि यदि अपने हिस्से का जमीन-जायदाद अपने भाईयों के नाम नहीं करता तो शायद आज ये दुर्दिन देखने को नहीं मिलता । लेकिन, गलती तो हो चुकी थी । "अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।" इन सारी बातों को सोच-सोचकर रामू काका मानसिक विक्षिप्तता की अवस्था में पहुँच गए थे। वे कोई भी निर्णय नहीं ले पा रहे थे कि अब क्या किया जाय । इसी उधेड़बुन में एकदिन रामू काका घर से निकल गए। किसी ने न तो उनसे पूछा और न जानने की कोशिश की कि आखिर वे कहाँ जा रहे हैं । घर छोड़ने के पश्चात् रामू काका आजतक वापस नहीं लौटे हैं । पता नही रामू काका कहाँ और किस हाल में होंगे । ●

Scanned with AnyScanner

प्रदूषण



स्वाति सौरभ
सुपुत्री श्री उमेश चौधरी
लेखा- अधिकारी

मानव जीवन सदैव पर्यावरण से प्रभावित रहता है। संतुलित पर्यावरण में सभी तत्वों की एक निश्चित मात्रा होती है । किन्तु, उसमें विषैले तत्वों की अथवा किसी एक तत्व की अधिकता या कमी हो जाने पर वातावरण दूषित हो जाता है । इसे ही प्रदूषण कहते हैं। इससे मानव जीवन, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे इत्यादि को नुकसान पहुँचता है ।

प्रदूषण विभिन्न प्रकार के होते हैं-वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण इत्यादि। इनमें सबसे हानिकारक है वायु-प्रदूषण। वायु मंडल में गैसों की मात्रा निश्चित होती है । वातावरण में ऑक्सीजन और नाइट्रोजन की कमी से प्रदूषण होता है । बढ़ती जनसंख्या, ज्वाला मुखियों के फटने, लकड़ी, खनिज तेल के जलने इत्यादि से कार्बन डाइऑक्साइड, मोनोक्साइड आदि विषैले गैसों से वातावरण दूषित हो जाता है। यह मानव के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

दूसरा हानिकारक प्रदूषण है - जल प्रदूषण । हम जानते हैं कि जल के बिना किसी भी प्राणी का जीवित रहना असंभव है । कल-कारखानों से निकले हुए वर्जित पदार्थ, रासायनिक पदार्थ आदि से भी जल प्रदूषित होता है । ऐसे जल के प्रयोग से विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं ।

तीसरा हानिकारक प्रदूषण है - ध्वनि प्रदूषण । बड़े-बड़े नगरों में अनेक प्रकार के वाहन, लाउड-स्पीकर, बाजे एवं औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के स्वर से ध्वनि प्रदूषण होता है । इससे मानव की सुनने की शक्ति कम होती है, उसके मस्तिष्क पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रदूषण की समस्याओं से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय जरूरी हैं -

1. अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाकर प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है । इससे वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा संतुलित रहती है ।
2. जंगलों के विनाश पर रोक लगा कर पर्यावरण को प्रदूषण से बचाया जा सकता है।
3. गाँव और नगर में सफाई अभियान चलाकर लोगों के सफाई और स्वच्छता के लाभों से अवगत कराकर प्रदूषण से बचाया जा सकता है ।
4. पीने का पानी स्वच्छ और साफ होना चाहिए और गाँव में जहाँ अभी भी लोग कुएँ का पानी पीते हैं, उसकी सफाई पर ध्यान देना चाहिए।
5. परमाणु विस्फोटो तथा परमाणु परीक्षणों पर पूर्ण नियंत्रण से भी प्रदूषण को कम किया जा सकता है ।

भारत देश में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने जल तथा वायु प्रदूषण को रोकने के लिए अनेक सुझाव दिए हैं । लोगों को उसपर ध्यान देना चाहिए । ●

Scanned with AnyScanner

भारत का उत्थान



स्वाति सौरभ
सुपुत्री श्री उमेश चौधरी
लेखा- अधिकारी

श्री राजीव गांधी ने भारत को 21वीं शदी की ओर ले जाने की बात कही थी । इसके लिए उन्होनें आधुनिक तकनीक कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोनिक्स, बायो-इंजीनियरिंग और अंतरिक्ष विज्ञान में प्रगति करने की चर्चा उठायी थी । उनका विश्वास था कि सभी क्षेत्रों में भारत को 21 वीं शदी की चुनौतियों के लिए तैयार किया जा सकता है ।

वास्तव में भारत भी एक ऐसा देश होगा जहाँ न केवल रोटी, कपड़ा और मकान जैसे आवश्यक सुविधाएँ प्राप्त होंगी, बल्कि हर प्रकार से आत्म विश्वास और आत्मोन्नति का अवसर भी मिलेगा । कुछ लोगों की कल्पना थी कि 21 वीं शदी में बड़े-बड़े नगर होगे, खेतों का सब काम मशीनों से होगा, स्वास्थ-रक्षा के लिए जगह-जगह अस्पताल होंगे, जहाँ डाक्टर जटील मशीनों की सहायता से अपने काम दक्षतापूर्वक कर सकेंगे ।

दुर्भाग्य की बात यह है कि भारत वर्षों से परतंत्र रहा है । जिस समय दूसरे देशों में औधोगिक क्रांतियाँ हो रही थी तथा विश्व के अन्य देश प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति कर रहे थे, उस समय भारत पर विदेशियों का शासन था । भारत उद्योग के क्षेत्र में अपेक्षाकृत प्रगति नही कर पा रहा था। 20 वीं शदी के मध्य में भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता मिली और कुछ ही वर्षों में यह विकास के रास्ते पर चल पड़ा । आज स्थिति यह है कि भारत वैज्ञानिक जगत में विश्व में तीसरा, औधोगिक जगत में दसवाँ, परमाणु उर्जा में छठा तथा अंतरिक्ष विज्ञान में पाँचवाँ स्थान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली है । आज हमारा देश कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोनिक्स, टी0वी0, रॉकेट, उपग्रह आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय स्थान बना लिया है । भारतीय जनसंख्या को ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति बनाई जा रही है । आशा है एक ऐसा समय भी आएगा, जब विश्व के बड़े-बड़े देशों के साथ हमारा भारत भी उच्च स्थान प्राप्त करने में सफल साबित होगा । ●

Scanned with AnyScanner

"सोचा था"



श्री ब्रजमोहन प्रसाद,
वरीय लेखाकार

सोचा था हमने कि चढ़ जायेगें आसमान के ऊपर ।
कुछ ही दिन में गिर कर हो गये बालू की रेत की तरह ।।
चढ़ने को चारों तरफ से बनाये थे सारे रास्ते ।
लेकिन हाथ मलते रह गए सेमर के फुल की तरह।।
जिसके हाथों में घर की सारी जबाबदेही थी यारों
उस घर में हो गये मोहन दरबान की तरह ।।
अपनों ने ही जख्म दिये प्रेम बन्धन के नाम पर ।
मोहन की शक्ल है आज वीरान की तरह ।।
सोचा था मुझको साथ देगा बुढ़ापे में कोई ।
लेकिन बेटा लाठी लिए खड़े हुए हैं, शैतान की तरह ।।
मरने के बाद मोहन को दीवार मिल जाएगी ।
पुष्प की माला पहन कर टंग जायेंगे कृष्ण भगवान की तरह ।।

Scanned with AnyScanner

भिक्षुणी की नागरिकता

श्री रामधार राय
वरीय लेखाकार

नदियों एवं पहाड़ों से घिरा प्रकृति की गोद में बसा एक छोटा राज्य नेपाल है । सभी आदर्शों की प्रतिमूर्ति राजा जनक का यह राज्य रहा है जिसकी राजधानी जनकपुर थी । इसके निकटस्थ हिन्दुस्तान का एक सुन्दर शहर सीतामढ़ी है जहाँ मिथिला के राजा जनक की पुत्री एवं जगत्-जननी सीता का जन्म हुआ था। इसे आज मिथिलांचल कहा जाता है । यह पौराणिक एवं ऐतिहासिक शहर राजा जनक की संस्कृति की धरोहर है। आज के दिनों मे भी वहाँ अटूट धार्मिक सहिष्णुता परिलक्षित होती है । जहाँ हिन्दू अपना सारा त्योहार होली, दशहरा, दिवाली धूम-धाम से मनाते हैं वहीं मुसलमान ईद, बकरीद एवं मुहर्रम अपने ढंग से अति निष्ठा से मनाते हैं । प्रत्येक पर्व में एक-दूसरे का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है । किंवदन्ती है कि जब सीता जी का स्वयंवर हुआ था एवं भगवान राम के साथ उनकी शादी हुई थी तो सभी राजा-महाराजा तो आमंत्रित थे ही पूरे देश के भिक्षुओं को बुलाकर भोज दिया गया था और तबसे हिन्दू एवं मुसलमान के द्वारा प्रत्येक उत्सव में भिक्षुकों को आमंत्रित किया जाता है । उन्हें भरपेट खिलाकर यथाशक्ति दान देकर अपूर्व आनन्द अनुभव किया जाता है । सीतामढ़ी के पवित्र-स्थल से सोलह किलोमीटर की दूरी पर नेपाल एवं हिन्दुस्तान की सरहद में अपूर्व प्राकृतिक छटा लिए नदी के किनारे बसा एक छोटा सा ग्राम है शहरगामा, जहाँ शिरोमणि नामक एक बुढ़िया की कुटिया है । इस बुढ़िया की भी बड़ी कारुणिक कहानी है । इसका भी एक छोटा सा हँसता-खेलता परिवार था। गाँव में एक बार भयंकर महामारी आई । इसने बुढ़िया के पति एवं एकमात्र जवान पुत्र को लील कर दुख विपत्ति के अंधकारमय भविष्य में उसे धकेल दिया ।

पेट भी अजीब है । आदमी से क्या-क्या नहीं कराता है ? धीरे-धीरे शरीर कमजोर होता चला गया। पेट की भूख मिटाने के लिए कोई सहारा नहीं । एक अवलंबन बना भिक्षा और वह गाँव के आसपास घूमती जो मिल जाता दिन-रात उसी में कटता, कहीं रहती और रात में अपनी कुटिया में लौट आती। आसपास के गाँव में जहाँ उत्सव होता पहुँच जाती। कुछ तो मिल ही जाता, फिर आगे बढ़ जाती ।

एक दिन शिरोमणि घूमते-टहलते जब गाँव के स्कूल के नजदीक पहुँची तो उसने वहाँ उत्साह से भरा मेला देखा । उसे बहुत खुशी हुई । उसे लगा कि आज दिन की समस्या खत्म । लोगों से पता चला कि चुनाव का महापर्व मनाया जा रहा है । चारों ओर पुलिस के विशाल समूह देखकर वह घबड़ा गई । लोगों ने कहा जाओ तुम भी अपना वोट डाल दो। किन्तु, पुलिस एवं असैनिक पदाधिकारियों ने उसे मतदान देने से इसलिए वंचित कर दिया कि वह भिक्षुणी है। पदाधिकारी ने बिना कुछ देखे छानबीन किये फैसला सुना दिया कि उसका नाम सूची में नहीं है। जब सूची बने अपना नाम लिखवा देना तब दूसरी बार अपना वोट डाल देना । वह बेचारी निराश होकर वापस आ गई और अपने दैनिक कार्य में जुट गई । किन्तु, वह हार नहीं मानी। उसने ठान लिया कि जब सूची बनेगी, अपना नाम अवश्य सूची में डलवा देगी। गाँव में यदा-कदा वह सबसे पूछती सूची कब बनेगी ? लोग उसे अपने अनुकूल जवाब देते। लेकिन, देखते-ही-देखते वह

Scanned with AnyScanner

अवसर भी आ गया। गाँव में बाहरी लोगों की जमघट होने लगी। पता चला कि मतदा
सूची में जिसका नाम छूट गया है उसे अंकित करने की कार्रवाई हो रहीं है। शिरोम
भी वहाँ पहुँची । अपना नाम सूची में डालने के लिए जिद्द करने लगी। यह देखक
पदाधिकारी को इतना क्रोध आया कि उसने धक्का देकर उसे गिरा दिया और डाँटते
कि भिक्षुणी इस देश का नागरिक नहीं हो सकता । कुछ लोगों को दया आ गई । लो
ने संभालकर उसे उठाया और हाथ में गिरी हुई लाठी पकड़ा कर कहा कि जाओ, दीन-हीन
के लिए यहाँ न्याय नहीं । कुछ लोगों ने सम्बन्धित पदाधिकारी को समझाने का प्रयास
किया कि वह भिक्षुणी जरूर है, किन्तु उसकी अपनी जमीन है, अपना मकान है- झोपड़ी
ही सही यही उसका महल है । लेकिन, उस मदान्ध पदाधिकारी ने किसी की नहीं सुनी

बुढ़िया को रोते-बिलखते छोड़ सबलोग चले गये । उसकी फरियाद कौन सुनता
उसे न्याय कौन देता । प्रकृति का भी अजीब रहस्य है । पुत्र-प्रेम, पति-पत्नी के
मधुर सम्बन्ध की भावना तो उसकी कब की मर चुकी थी, लेकिन देश के नागरिक बने
रहने की उसकी इस भावना को भी निर्दयी व्यवस्था ने कुचल दी ।

समय सबसे बड़ा मलहम होता है । यह बड़े-बड़े नासुर को भी भर देता है
वह भी धीरे-धीरे इसे भूलकर अपने दैनिक कार्य में जुट गई एवं पूर्व की भाँति पर्व एवं
उत्सव की प्रतीक्षा में दिन काट्ने लगी । होली आई, ईद आया । छोटे-बड़े कई पर्व आये,
किन्तु उसकी सबसे बड़ी प्रतीक्षा दशहरा की होती है- क्योंकि दशहरे का पर्व लगातार कई
दिनों तक होता है । इन दिनों में उसकी भीक्षा की पोटली में इतना कुछ आ जाता है
कि महीनों उसका गुजारा चलता है ।

एक दिन प्रतीक्षा का अन्त हुआ और चिर प्रतिक्षित दशहरा आ ही जाता है । दशहरे
की प्रत्येक तिथि का महत्व होता है। भगवती की पूजा-अर्चना, उनके दर्शन के लिए सैकड़ो
की भीड़ होती है । उनकी पूजा का अन्त भिक्षुकों के दान से होता है । यही रहस्य है-उन
भिक्षुओं की जमघट एवं उनके उत्साह का । शिरोमणि के गाँव शहरगामा जो भारत-नेपाल
का संगम है, इस गाँव में शाँत,गम्भीर एवं स्वर्णिम प्राकृतिक सौन्दर्य लिए हल्के मुस्कान
से बहती हुई नदी के किनारे एक दुर्गामंदिर है । माँ दुर्गा की पूजा के लिए यह विख्यात
है । नेपाल एवं हिन्दुस्तान दोनो देशों के लोगों की अपार भीड़ यहाँ जमा होती है।
नियंत्रित करना पुलिस की चुनौती होती है । खासकर आज के दिनों में जहाँ समाज के
आतंकवादी, माओवादी जैसे असमाजिक तत्व भीड़ में दहशत फैलाने के लिए कुछ भी
घृणित एवं निंदनीय कार्य कर सकते हैं । पुलिस की जिम्मेवारी बढ़ जाती है ।

जगतजननी सीता की धरती पर दुर्गापूजा का महत्व बढ़ जाता है। किंवदन्ती है
कि माँ दुर्गा के दस रूपों में एक स्वरूप माँ सीता का है । माँ सीता के स्वरूप होने
के कारण दूर-दूर से स्त्री, पुरूष एवं बच्चों के आगमन के कारण भीड़ का अनियंत्रित
होना स्वाभविक है ।

माँ दुर्गा की प्रतिमा के ठीक सामने सड़क के दोनो किनारे भिक्षुकों की कतार देखते
बनती है । उस कतार के बीचों-बीच शिरोमणि स्थिर-चित भाव लिए बैठी है । उसे गर्व
है कि उसकी धरती पर इतना बड़ा मेला, इतना उत्सव एवं उसके समान सैकड़ो भिक्षुओं
का गुजारा यहीं से होता है । अतः आज कतार में वह सबकी मल्लिका बनकर बैठी
है । सबके बीच आज उसका सम्मान है ।

Scanned with AnyScanner

देखते-देखते दशहरा गुजरने लगा । आज दशहरे की नवमी तिथि है। आज की तिथि का सबसे बड़ा पौराणिक महत्व होता है । आज के दिन सबसे बड़ी भीड़ होती है । सामानों की खरीद-बिकी भी आज चरम सीमा पर पहुँच जाती है ।

दिन के तीन बजे हैं । भिक्षुओं के बीचों-बीच शान्त भाव लिए खुशियों की भावनाओं में बहती शिरोमणि मिलनेवाले दान से प्रसन्न है और अपनी पोटली में उन्हें रखने में व्यस्त है कि एक पच्चीस वर्षीय युवक मिठाई के डिब्बों के साथ एक झोला शिरोमणि के हाथ में थमाती है । नवमी के दान स्वरूप दो हजारे रूपये की नोट की एक गड्डी शिरोमणि के हाथ में डालकर यह कहकर चलने लगता है कि पाँच बजे लौटूँगा तो मेरा झोला वापस दे देना। आज की तिथि पर और दान दूँगा । मिठाई का डिब्बा एवं रूपये की गड्डी तेरी है सिर्फ झोला मेरा है । मैं इसे दो घंटे में ले जाऊँगा । तबतक संभालकर रखना। कतार में बैठे सभी भिक्षुक अपनी-अपनी भीक्षा समेटने में व्यस्त माँ के दर्शन से लौटने वालों पर उनकी नजर होती है, क्योंकि दान,भिक्षा तो उन्हीं से मिलना है । शिरोमणि के इस अप्रत्याशित दान को किसी ने विशेष में नहीं लिया क्योंकि आज तो वह इस मेले की महारानी है। उसे कुछ भी मिल सकता है । सबको यह आभास है कि यह धरती उसी की है । लेकिन उस नवयुवक द्वारा दान स्वरूप दी गई मोटी रकम एवं हाथ में थमायें गये झोले ने उसकी भावनाओं को इतनी आन्दोलित की है कि वह कतार में बैठने एवं दान लेने में असहज महसूस कर रही है । प्रेम, प्यार, स्नेह, सद्भावना की भावनाओं का उसके लिए कब अन्त हो गया उसे पता ही नहीं चला । उसे उस युवक के इस दान में खोट दिखने लगा और मिठाई के डिब्बे एवं झोले से भय एवं आशंकाओं से वह घिरने लगी । वह इतनी असहज हो गई कि उसके दिये सारे सामानों को अपनी पोटली में रखकर धीरें-धीरें लाठी के सहारे घिसटती हुई आगे बढ़ते जाती है । उसका रास्ता एकाएक स्थानीय थाना के मुख्य दरवाजे पर जाकर रूक जाता है, जहाँ वह सप्ताह में एक दिन प्रायः भीक्षा के लिए आ जाती है । स्थानीय पुलिस उसे सस्नेह कुछ दे देती है । अतः उसे थाना से लगाव है और यहाँ आने में कोई संकोच नहीं होता है ।

जैसे ही वह थाने के गेट से थाने के बरामदे पर पहुँचती है उसी समय थानेदार भी कहीं से आते है और भिक्षुणी को प्रेम से कहते हैं-आज तो तुझे मेले में ही रहना चाहिए । वहाँ ही इतनी भीक्षा मिलती कि तुम रख नहीं पाती। यहाँ तो तुम आती-जाती रहती हो । मेला में ही जाओ और यह कहकर दस रूपय का नोट बढ़ाते हुए कहा- शिरोमणि लो यह दशहरे का दान है और जल्दी जाओ भीतर बड़े-बड़े पदाधिकारी बैठे हैं। शिरोमणि भी कहाँ मानने वाली थी । उसने अपनी पोटली से मिठाई का पैकेट, रूपये की गड्डी एवं कुछ सामान वाला वह झोला थानेदार साहब को देती है । बेचारा थानेदार जहाँ एक ओर उस भिक्षुणी की ईमानदारी, समझदारी एवं निष्ठा पर आश्चर्यचकित होता है वहीं कुछ सामानों से भरे झोले पर भयभीत भी । तुरन्त उसने थाने में बैठे सारे पदाधिकारियों को इसकी सूचना दी और देखते-ही-देखते सारे प्रशासन के लोगों की जमघट होने लगी । सबों को झोले में 'बम' की आहट होने की संभावना थी । बम-निरोधक दस्ता बुलाया गया । चप्पे-चप्पे पर तो पुलिस की व्यवस्था थी ही । थोड़ी ही देर में बम-निरोधक दस्ता भी पहुँचा । झोले के सामानों की जाँच शुरू हुई । उसमें दो बम एवं कुछ विस्फोटक सामान निकला । बम-निरोधक दस्ता ने उसे निरस्त किया ।

Scanned with AnyScanner

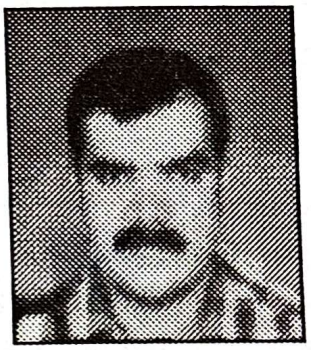
प्रशासन की इतनी बड़ी महफिल के बीचों-बीच पेट-पीठ मिली हुई एक हाथ में लाठी का सहारा लिए बैठी शिरोमणि देखने में अजीब लगती थी। सब उसे अपने-अपने ढ़ंग से पूछते । सबको सच्ची बातों का उल्लेख करती। देखते-ही-देखते जिला प्रशासन भी पहुँच गया । सभी-लोग उसकी ईमानदारी, समझदारी की कायल थे । थोड़ी देर में जिला प्रशासक पहुँचे । वहाँ पर शिरोमणि को बुलाया गया। उसने क्रमबद्ध सारी घटना का उल्लेख किया । जिला प्रशासक दंग रह गये। एक भिक्षुणी में इतनी देशभक्ति । ऐसा उसने कहीं नहीं देखा । कही नही पाया । शायद कही वह पाये भी नहीं । जिस भिक्षुणी की पेशा है "कुछ लेना"। लेकिन उसने देश भक्ति की खातिर लोगों की जान की कीमत पर चाँदी के चन्द टुकड़ों के लिए अपने जमीर को नहीं बेची और उसने पैसों को ठुकरा दिया ।

उस भिक्षुणी की यह घटना दावाग्नि की तरह पूरे मेले में फैल जाती है । उसे देखने के लिए थाने में सब दौड़ पड़ते हैं । पत्रकार भी जमा हो जाते हैं और बुढ़िया को घेरने का प्रयास करते हैं । प्रश्नों का बौछार होने लगता है । वह नासमझ भिक्षुणी काश उनकी अंग्रेजी एवं हिन्दी को समझ पाती। लेकिन, उसी पत्रकार में से एक ने पूछा- माँ! तुमने ऐसा क्यों किया ? क्यों नहीं पैसे को छिपा लिया ? तीस वर्षो के बाद किसी के मुँह से 'माँ' शब्द सुनकर उसका ममत्व जग उठा। उसकी आँखों में विचित्र चमक दिखने लगी और उस पत्रकार की ओर मुँह कर वह खड़ी हो गई और बड़े विनम्र भाव से बोली-बेटा! बहुत दिन पहले की बात है, यहाँ एक बड़े साहब आये थे। उन्हें लोग लाट् साहब कहते थे। उनका नाम था जाकिर हुसैन । उन्होंने कहा था कि यह राजा जनक एवं माँ जानकी की धरती है । पूरी दुनिया में ऐसी पवित्र धरती के प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए एवं इसकी रक्षा करनी चाहिए । मुझे भय था कि उस झोले में कहीं कुछ ऐसी चीज नहीं हो जो मेरी इस धरती के लोगों को कुछ हानि पहुँचाए । मैनें इसी धरती की रक्षा के लिए ऐसा किया। उस भिक्षुणी के इस कथन में कितनी बड़ी भावना छिपी थी । सभी पत्रकार, सभी पदाधिकारियों ने एक स्वर से कहा-माँ, तुझे सलाम। जिलाधीश महोदय अपनी कुर्सी से खड़े होकर भीड़ को चिरता हुआ शिरोमणि के नजदीक जाकर पूछा, माँ! तुझे मेरा शत्शत् प्रणाम । बोलो तुम्हें क्या चाहिए ? आस-पास के लोग कहने लगे माँगो! जो चाहो कलक्टर साहब से माँगो । कोई कहता लाख रूपया माँगो! वह सबकी बात सुनती रही, सोचविचार कर वह बोली-जो मागूँगी, दोगे । अगर दे सको तो मुझे इस धरती की नागरिकता दे दो। मुझे अपनी छोटी सी जमीन पर अपनी झोपड़ी है । लेकिन, मुझे नागरिकता नहीं है। पास में खड़ा उसकी नागरिकता अस्वीकृत करने वाला पदाधिकारी आत्मग्लानि से अपने आप लज्जित हो रहा था । वह अपने-आपको संभाल न सका और शिरोमणि के गले पकड़ कर फूट-फूट कर रोते हुए विलखने लगा, माँ! मुझे माफ कर दो ।

धन्य है । वह भिक्षुणी जिसकी कर्तव्य निष्ठा, देश-भक्ति पर सारा देश नतमस्तक है । काश ! उसके आदर्श एवं नैतिक मूल्यों को हम भी अपने जीवन में उतार पाते।

Scanned with AnyScanner

संचार क्रान्ति - एक दृष्टि



श्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

आदि काल में मनुष्य की एकमात्र आवश्यकता रोटी थी। मनुष्य के सभ्य होने के साथ उसे वस्त्र की आवश्यकता हुई, और कालान्तर में आवास भी उन आवश्यकताओं में जुड़ गई। आज इन तीन आवश्यकताओं की पूर्ति कर मनुष्य अपने को सभ्य-समाज का अंग समझता है। समाज ने इन तीनों वस्तुओं को ''मूलभूत आवश्यकता'' की संज्ञा दी है।

यद्यपि हवा, सूर्य की रोशनी एवं पानी जीवन के लिए परम-आवश्यक है, परन्तु इसे प्राप्त करने में चुँकि मानव को विशेष श्रम नहीं करना पड़ता, सम्भवतः इसी कारण से इन्हें ''मौलिक आवश्यकता'' का दर्जा नहीं दिया गया है।

सभ्यता के विकास के साथ नित नई वस्तुएँ, मनुष्य की आवश्यकताओं में सुमार होती गईं, परन्तु किसी भी वस्तु को ''मौलिक आवश्यकता'' का दर्जा समाज ने नहीं दिया। ये सामान्य वस्तुएँ मात्र बन कर रह गईं।

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में प्रारम्भ संचार -क्रान्ति ने पूरे विश्व में हलचल मचा दी। इक्कीसवीं सदी के आरम्भ के साथ ही इस क्रान्ति के सहारे लोग कागज-विहिन समाज एवं वैश्विक ग्राम की परिकल्पना करने लगे। लोगों की निर्भरता संचार उपकरणों (यथा-दूरदर्शन, मोबाइल, लैप टॉप, कम्प्युटर, इन्टरनेट, आई पौड आदि) पर बढ़ने लगी। आज शायद ही ऐसा कोई मनुष्य मिले जो इन उपकरणों से अछूता हो। बुर्जुआ से लेकर सर्वहारा सभी वर्ग के लोग इसका इस्तेमाल करते हैं। उदाहरणार्थ-मोबाईल जिसका इस्तेमाल एक हवाई जहाज उड़ाने वाला भी करता है और रिक्शा चलाने वाला भी। सारांशतः ये (Instruments) लोगों के रोजमर्रा की जिन्दगी का अहम् हिस्सा बन चुका है। इसके अभाव में सामान्य जन -जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है।

ऐसे में मानवशास्त्रियों के बीच एक नई बहस छिड़ गई है कि क्या इसे मनुष्य की 'मौलिक आवश्यकता' मान ली जानी चाहिए।

इसके पक्ष और विपक्ष में बड़े ही जोरदार तर्क दिए जाते हैं, जहाँ एक पक्ष इसे 'मौलिक आवश्यकता' मानने का प्रबल हिमायती है, वहीं दूसरा पक्ष, घोर विरोधी तो नहीं, इसे समान्य उपयोग का वस्तु मानता है।

एक प्रसिद्ध मनोविज्ञानी के अनुसार किसी वस्तु की सार्थकता उसके सकारात्मक पक्ष से नहीं, नकारात्मक पक्ष को देखकर आँकी जाती है, और नकारात्मक पक्ष के न्यूनान्यून होने पर ही समाज उसे मान्यता देता है। एटम बम का सकारात्मक पक्ष इसके नकारात्मक पक्ष के मुंकाबले बहुत निर्बल है, अतएव समाज इसे मान्यता

Scanned with AnyScanner

नहीं देता। अब हम जरा रोटी, कपड़ा और मकान जैसे वस्तुओं के नकारात्मक पक्ष पर विचार करें। संचार उपकरणों के नकारात्मक पक्ष को भी सूचीबद्ध करें और इसकी तुलना 'मौलिक आवश्यकताओं यथा रोटी कपड़ा और मकान के नकारात्मक पहलुओं की सूची से करें। तुलना से ही यह बात समझ में आ जाती है कि संचार-उपकरण को मौलिक आवश्यकता का दर्जा दिया जा सकता है अथवा नहीं।

किशोर वर्ग, समाज का सर्वाधिक ऊर्जावान वर्ग होता है। यही वय है, सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता की प्रवृति को बढ़ावा देने का, सामर्थ्य बढ़ाने का। इन किशोर वय वर्ग का संचार उपकरणों पर अधिकाधिक निर्भरता चिन्ता का विषय है। विद्वानों के अनुसार सामर्थ्य की तीन प्रमुख घटक होते है (क) भावना (ख) ज्ञान और (3) व्यवहार। संचार उपकरण ज्ञान बढ़ाने में सहायक तो हो सकते है, परन्तु भावना एवं व्यवहार से इनका कोई नाता नहीं । इन संचार उपकरणों के माध्यम से हम तकनीकी क्षेत्र में प्रवीण व्यक्ति की परिकल्पना तो कर सकते है, परन्तु उसमें व्यवहार-कुशलता एवं माननीय संवेदना को समझने का गुण का सर्वथा अभाव रहेगा। व्यवहार- कुशलता और भावना का संवर्द्धन समाज ही कर सकता है, उपकरण नहीं। इतना ही नहीं Internet, i-Pod आदि पर अधिकाधिक समय व्यतीत करने वाले विद्यार्थी की उपस्थिति सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में रूचि दिनोंदिन घटती जा रही है, जो समाजशास्त्रियों के लिए चिन्ता का विषय है।

आज एक औसत विद्यार्थी की रूचि पुस्तकों के अध्ययन मे घटा है, वह मात्र सूचना एकत्र करने का माध्यम बन गया है। Internet से download किए गए सूचना पर आधारित समझ तथा विशेषज्ञों के सानिध्य एवं पुस्तकों के अध्ययन से अंगीकार किए गए समझ में काफी फर्क है, यही कारण है कि विषय के गंभीर अध्ययन से विद्यार्थी हटता जा रहा है, उसमें सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता की प्रवृति का ह्रास हो रहा है।

दूसरा पक्ष E-mail, SMS में इस्तेमाल होने वाली भाषाओं पर भी कड़ी एतराज जताते हैं। उनके अनुसार यह एक ऐसी प्रवृति को जन्म दे रहा है जो साहित्य को निगल जाएगा, व्याकरण का विनाश कर देगा। वस्तुतः ये संचार क्रान्ति को पूँजीपतियों का साजिश मानते हैं। एक आँकड़े के अनुसार पूरे विश्व में SMS भेजने एवं Receive करने का कारोबार (उपकरणों की खरीद इसमें शामिल नहीं है) लगभग 50 हजार करोड़ रूपये का है। इतनी मोटी कमाई की आँधी में नैतिकता, संवेदना की चिन्ता किसे है ? वहीं दूसरे पक्ष के लोग इन आँकड़ों को समान्य जनों के बीच इन उपकरणों के बढ़ते प्रचलन का प्रमाण मानते हैं।

दोनों पक्ष के अपने-अपने तर्क हैं, और आगामी कुछ वर्षो तक यह बहस तब तक चलता रहेगा जब तक कि समाज इस पर 'मौलिक आवश्यकता' की मोहर न लगा दे अथवा इसे समान्य प्रचलन की वस्तु न मान लें।

हम सब भी जागरूकता पूर्वक इसका आकलन तब तक अपने-अपने ढंग से करते रहेगें। ●

Scanned with AnyScanner

'अपना नहीं रहा अपना'



श्री दयानन्द प्रसाद
वरिष्ठ लेखाकार

कुछ लिखना है परन्तु क्या लिखूं, क्या कहूँ, कैसे कहूँ यह मेरे लिए एक समस्या है। मैं जो कुछ भी देखता हूँ उसमें समस्या हीं समस्या नजर आती है। जीवन मनुष्य का बहुत जटिल होती जा रही है। सरलता लुप्त होती जा रही है तथा जटिलता उसकी जगह लेती जा रही है। जिधर नजर डालिए उधर ही बदलाव, बेवफाई, बेवकूफी, बड़ाई लेने की होड़, बड़ा होने की दौड़, बेवकूफ बनाने की चाल एवं जाल बिछे हुए है। मगर ये चाल एवं जाल इतने गहरे होते हैं कि इसकी लपेट में आने के पूर्व उसका आभास ही नहीं मिलता है। मानव जीवन अशांत होता जा रहा है। इसका कोई एक निश्चित कारण ढूंढ़ना मुश्किल है। कारण कार्य में बदल जाता है तथा कार्य कारण बनकर दूसरे कार्य को सम्पादित करता है।

नवजात शिशु के रूप में मनुष्य, जन्म के समय बहुत ही असहाय होता है। उसके माता-पिता एवं अन्य अपनों द्वारा उसका लालन-पालन किया जाता है। बढ़ते बच्चे में अपनापन की भावना भी समय के साथ बढ़ते हैं। बच्चे को कुछ देने पर तुरन्त ही लेकर अपने मुख में डालने का प्रयास करते हैं। दिए हुए चीज को बच्चे से वापस लेने का प्रयास करने पर वे उतनी आसानी से नहीं लौटाते जितनी आसानी से लेते हैं। यह प्रवृति प्रकृति प्रदत्त है जिसे स्वार्थ कहा जाता है। लेने की प्रवृति प्रायः सभी में पाया जाता है और देने की प्रवृति बहुत कम मे पाया जाता है। बड़ा होने पर कुछ मनुष्यों में स्वार्थ की भावना बहुत बढ़ जाती है। अपना स्वार्थ के सामने सबकुछ भूलाकर किसी का भी अहित कर बैठता है। ऐसा मनुष्य परिवार, समाज, राज्य एवं देश का अहित करने को हमेशा तैयार रहता है। इसके विपरीत कुछ मनुष्य इतना कम स्वार्थी होता है कि उसे अपना एवं पराया में कोई भेद नजर नहीं आता। उसके द्वारा जो कुछ किया जाता है उससे पूरे समाज, देश एवं दुनिया को लाभ एवं सकुन मिलता है। ऐसे मनुष्य के अंदर महान आत्मा निवास करती है। ऐसे पुरूष को ही महात्मा कहा जाता है। प्रत्येक काल में विश्व के देशो में कुछ महान पुरूष अवतरित हुए हैं जो संसार को नई रौशनी देकर नई एवं सही रास्ता दिखाकर मानव जीवन को सरल एवं सुखमय बनाने का संदेश दिए। कराहती मानवता को आज स्वार्थी व्यक्तियों के चंगुल से छुड़ाने की आवश्यकता है। मनुष्य को महान पुरूषों के संदेशो को अपनाकर, सत्कर्म कर मानव जीवन को बेहतर से बेहतर बनाने में लगाना चाहिए। परन्तु, बहुत ही कम मनुष्य परमार्थ कार्य में लगता है। अपनी सारी शक्ति, सामर्थ्य एवं समय को लगा देता है, स्वयं के जीवन संवारने में। परन्तु, जीवन संवार नहीं पाता है। कारण है सोंच एवं व्यवहार का ही संकुचित एवं उल्टा होना।

मनुष्य का व्यवहार 'अपना' से घिरा होता है। वह जो कुछ करता है उसक लगाव 'अपना' से होता है। उसका व्यवहार 'अपना' तक ही सीमित हो जाता है अपना लाभ, अपना कल्याण, अपना हित, अपनी सुरक्षा, अपना विकास इत्यादि किस तरह हो चाहे अन्यों का, देश का कुछ भी अहित हो इसकी परवाह नहीं करता। अप हित के लिए कुछ भी करना पड़े, सब कुछ अर्थात् गलत से गलत युक्ति एवं व्यवह

Scanned with AnyScanner

अपनाने को व्याकुल रहता है। इस प्रकार की व्याकुलता के माध्यम से सुख, समृद्धि एवं शांति चाहता है। यही अधिकांश मनुष्य की स्थिति है। तो फिर ऐसी स्थिति में सुख, समृद्धि एवं शांति कैसे प्राप्त हो सकती है जब इसका आधार ही गलत है तथा व्याकुलता से सिंचित हो। चाहत के अनुकूल आधार भी होना चाहिए। सही मायने में विकास, समृद्धि, सुख एवं शांति के लिए 'संकुचित अपनापन' के दायरों से निकलकर बिना दूसरों को अहित पहुँचाए सही रास्ते को चुनकर कार्यशील होना' पड़ेगा।

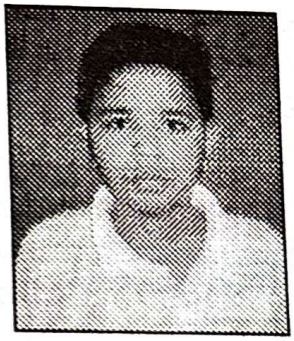
मनुष्य कभी गौर से सोचता तक नहीं है कि जिसे हम 'अपना' समझते हैं तथा जिसके लिए बहुत कुछ या सबकुछ करने को तत्पर रहते हैं वह हमेशा मेरा अपना नहीं रहेगा। अभी अपना समझकर दूसरों के हित पर कुठाराघात करते हैं, परन्तु आनेवाले समय में वह अपना, अपना नहीं रह जाएगा और इसका कारण है अपना समझा जाने वाला द्वारा किसी अन्य से सम्बंध स्थापित कर उसे अपना बनाना। इस प्रकार 'अपना' स्थायी नहीं होता है बल्कि परिवर्तित होते रहता है। जो परिवर्तित है उसके लिए दूसरों का अहित करना सही नहीं है, ऐसा समझ पैदा करने की आवश्यकता है। और तभी सही समृद्धि, सुख एवं शांति मनुष्य को मिल सकती है।

अपना परिवर्तित है, ऐसा उल्लेख उपर किया गया है। इसकी एक दूसरी विशेषता है इसका दायरा। इसका दायरा/आकार घटता – बढ़ता रहता है। मनुष्य की स्थिति बदल जाती है तो अपनापन का दायरा भी बदल जाता है। मनुष्य की स्थिति सबल हो जाने पर 'अपना' का दायरा भी बढ़ जाता है। कल जो गैर था आज अपना है, का ढोंग रचता है।

एक निर्बल व्यक्ति को कोई प्रभावशाली पद हासिल हो जाए, या धनवान हो जाए, तो देखिए उसके अपनों की तादाद लम्बी हो जाती है। जिसे वह जानता एवं पहचानता तक नहीं है वह अपने आप को उनका करीबी होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। और अपना होने के आधार पर ढेर सारी अपेक्षाओं को उस पदधारी से पूरा करवाना चाहता है। अपेक्षाओं को पूरा नहीं होने पर अनेकों प्रकार की आलोचना प्रारम्भ कर देता है तथा अपनापन, गैरपन में बदल जाता है। अपनापन के दूसरे पहलू को भी देखा जाय। आप की अपनी सन्तान परिवार के अन्य लोग, सम्बंधी लोग, गाँव, मुहल्ला के परिचित लोग, दोस्त इत्यादि सभी के सभी विपत्ति के समय कन्नी कटाना चाहते हैं। कुछ व्यक्ति कुछ औपचारिकता निभाता है तथा धीरे–धीरे अपनों का आकार बहुत छोटा हो जाता है । अगर आपकी बदहाली एवं बीमारी लम्बी है तो अपनों का आकार बहुत ही छोटी हो जाएगी और आपका सन्तान भी 'अपनों' के दायरे से बाहर निकल जाता है। अगर आप पुरुष हैं तो अपनों के रूप में सामने रह जाएगी सिर्फ पत्नी। और अगर स्त्री है तो सन्तान के साथ ही साथ पति भी शीघ्र ही 'अपना' के दायरे से बाहर निकल जाएगा। बच जाएगा भाड़े के दाई और सेवक। यही हाल है 'अपनों' का। जब 'अपना' अपने रूप एवं आकार को इतना बदलता है तो फिर मनुष्य अपना एवं गैर में भेदकर अपने सामर्थ्य, शक्ति एवं समय को दूसरे/गैर के अहित कर अपनों के लिए क्यों व्याकुल रहता है, एक आश्चर्य सा लगता है। सिर्फ आश्चर्य ही नहीं, बल्कि बड़ी बेबकूफी। जरूरत है ऐसी बेबकूफी को त्यागने की ताकि पृथ्वी पर समस्या घटे। व्याकुल लोग राहत की सांस लें तथा देश में समृद्धि आए तथा सब लोग सुखपूर्वक जीवन यापन करें तथा शांति का संदेश दुनियाँ को दे सकें। दुनियाँ जाने कि भारत सही मायने में महावीर एवं बुद्ध की धरती है। भारत ही नहीं दुनियाँ के सभी देशों में आज सौहार्द एवं शांति की जरूरत है। ●

Scanned with AnyScanner

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना



अश्विन अनुराग
सुपुत्र श्री प्रेम निवास मिश्रा।
सहायक लेखा अधिकारी

'मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना' – लगभग प्रत्येक धार्मिक ग्रन्थ इस बात का गवाह है कि इस शिक्षा का आज के युग में कितना पालन हो रहा है। गीता में श्री कृष्ण ने, रामायण में श्रीराम और बाइबल में ईसामसीह ने कहा है कि हमें मन का द्वेष मिटाकर, दूसरों को गले लगाकर, प्रेम की मशाल को प्रज्जवलित करनी चाहिए। परन्तु, अहो दुर्भाग्य ! शायद ही कोई प्रेम का वास्तविक अर्थ जानता हो ? हिन्दुओं ने मुसलमानों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया, तो मुसलमानों ने हिन्दुओं पर धावा बोला। सिख और ईसाइयों ने तो एक-दूसरे का अस्तित्व ही मिटाने का संकल्प ले लिया। आखिर यह समझ में नहीं आता कि एक ही राष्ट्र में रहकर हम एक-दूसरे के प्रति इतने कठोर कैसे हो सकते हैं ? परन्तु, सत्य तो सत्य है कि इसे चाहकर भी नहीं बदला जा सकता और इसी सत्य पर प्रकाश डालने हेतु प्रस्तुत हैं यह कहानी- 'संध्या का समय था। इंद्रजीत समुद्र के किनारे, एक चट्टान पर बैठकर, समय और समुद्र के प्रवाह पर विचार कर रहा था। वहीं सूर्य की किरणें, जो कि कभी इंद्रजीत के मुख-मंडल को आशाओं से भर देती थीं, आज वही किरणें, मौत का पैगाम लेकर आई थीं। समुद्र के सामने कई लाशें बिछी थीं, और कितनों को न जाने समुद्र अपने गर्भ में समा चुका था। अनगिनत घर बर्बाद हो चुके थे और कई हजार लोग मौत के मुख में प्रवेश कर चुके थे।

शुकवार का दिन, इक़बालपुर के इतिहास में एक और काले दिन के रूप में अंकित हो चुका था। आज से ठीक तीन दिन पहले, यानि मंगलवार को, बेचारे चौदह वर्षीय इंद्रजीत का परिवार हनुमान मन्दिर में दर्शन करने गया हुआ था, जहाँ इस्लाम समर्थकों ने, मन्दिर में चुपके से आग लगा दी थी। इसकी वजह से अनेक निर्दोषों की जाने गई थीं। इंद्रजीत के परिवार के सभी सदस्य उस हादसे में मारे गए थे। बच गया, तो सिर्फ 'इंद्रजीत'।

एक बार फिर, आज शुकवार को, कुछ उसी तरह का हादसा हुआ। शहर के सबसे भीड़-भाड़ वाले इलाके, हलदारगंज में, हिन्दु समर्थकों ने एक खचाखच भरे मस्जिद को बम से उड़ा दिया। कई लोगों के परखच्चे उड़ गए। जहाँ मस्जिद थी, वहाँ अब केवल, चिथड़े और खंडहर दिखाई दे रहे थे।

कोई चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रहा था। सरकार भी विवश थी। ऐसा लगता था मानो स्वयं ईश्वर भी गहन निद्रा में चले गये थे। उस विशालकाय सागर की तरह

Scanned with AnyScanner

फैल रहा था धरती पर पाप।

हिन्दु-मुसलमानों के बीच छिड़ा यह घमासान कई व्यक्तियों के प्राण लील चुका था और न जाने कितनों की बारी आने वाली थी। उम्मीदें टूट कर बिखर चुकी थीं। इंद्रजीत को अपना जीवन व्यर्थ सा प्रतीत हो रहा था। जीवन के प्रति उसका मोह खत्म हो चुका था। रह-रहकर उसे अपने परिवार की याद विचलित कर देती थी।

तभी अचानक किसी ने पीछे से उसके कन्धे पर हाथ रखा। ऐसा लगा जैसे कि इंद्रजीत के लड़खड़ाते कदमों को किसी ने सहारा दिया हो। उसने पीछे मुड़कर देखा। सामने लंबी ढ़ाढ़ी वाला वृद्ध व्यक्ति, एक अपरिचित मुस्कान के साथ, इंद्रजीत को ममता भरी दृष्टि से देख रहा था। उसकी आँखों में आँसू छलक आए।

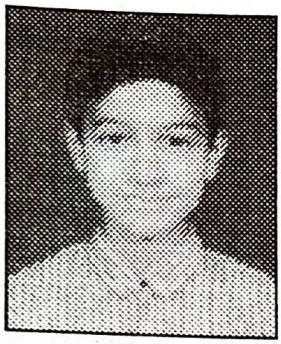
उस व्यक्ति ने ठण्डी आह भरी और रुआँसे स्वर में, इंद्रजीत को गोद में उठाता हुआ बोला- "बेटा! आज से तुम अनाथ नहीं हो। रहीम खाँ तुम्हें गोद लेगा। मै तुम्हें पढ़ा-लिखाकर एक बड़ा आदमी बनाऊँगा। तुम मेरे साथ चलोगे न?"

इंद्रजीत के आँसुओं का बाँध टुट गया। नदी की मझधार में डगमगाती एक नौका को किनारे तक का रास्ता मिल चुका था। इंद्रजीत ने रहीम खाँ की उँगली थामी और मन में नई आशाओं को संजोए, वह एक नई जिंदगी की तलाश मे निकल पड़ा। धीमी-धीमी हवाओं ने ठंड में बढ़ोतरी ला दी थी। सूर्य धरती के भीतर चेतना-विहिन होकर प्रवेश कर चुका था। परन्तु, इंद्रजीत के जीवन में सूर्योदय अभी-अभी ही हुआ था।

अतः मजहबी एकता के द्वारा ही भारत प्रगति के राह पर चल सकता है। आपसी लड़ाई -झगड़ा मानवता को पतन की ओर ढ़केल रहा है। अतः इसे वश में करना अति आवश्यक है। प्रेम और भाई -चारे की भावना ही एकमात्र विकल्प है। एक ही राष्ट्र में रहकर हमें एक दूसरे के प्रति बैर नही मोल लेना चाहिए। शांति और सद्भावना की सहायता से ही मुश्किलों का समाधान ढूँढा जा सकता है। ●

Scanned with AnyScanner

एक अहंकार–'दुर्गुण हजार'



शुभम
सुपुत्र-श्री भारत भुषण झा
सहायक लेखा अधिकारी

'अहंकार' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। समस्त देहधारी (यथा पशु, पक्षी, पेड़–पौधे, मनुष्य इत्यादि) अहंकार से व्याप्त हैं मोटे तौर पर अहंकार से आशय मैं /मेरा से होता है। ईश्वर प्रदत निज देह का अहंकार सर्वप्रथम है। मनुष्य जाति निज देह के अहंकार से अत्यधिक पीड़ित है। उसके साथ जुड़े किसी को अपने पद का, किसी को अपने धन –सम्पत्ति का, किसी को अपनी विद्वता का, किसी को अपनी यश/प्रतिष्ठा का, किसी को अपनी सन्तान का, किसी को अपने भवन का और न जाने कितने लोगों को किन –किन चीजों का अहंकार होता है, कहना मुश्किल है वस्तुतः ईश्वर प्रदत शरीर एक क्षेत्र है और इसमें प्रविष्ट आत्मा क्षेत्रज्ञ हैं। क्षेत्र या शरीर नश्वर है। क्षेत्रज्ञ या आत्मा परमात्मा का अंश होने के कारण नश्वर नहीं है। शरीर (क्षेत्र) मैं नहीं हूँ, मैं आत्मा (क्षेत्रज्ञ) हूँ। जब मैं शरीर नहीं हूँ तो निज देह का अंहकार करना एक भ्रम है तथा इस शरीर से जुड़ी वस्तुएँ भी मेरी कहलाने लायक निश्चित रूप में नहीं है। मैं तो आत्मा हूँ और उससे जुड़े सर्वाधार परमात्मा ही मेरा सर्वस्व हो सकता है। इसलिए अहंकार करना ही है तो सिर्फ परमात्मा पर किया जा सकता हैं जो इस विश्व ब्रह्माण्ड के नियन्ता है और जिस प्रकाश पुंज के हम एक अंश है ।

अध्यात्म क्षेत्र में अहंकार को उन्नति में बड़ी बाधा बताई गई है। मेरा मानना है कि अंहकार दैनन्दिन जीवन में भी अच्छा नहीं है। अंहकार रहित व्यक्ति विनम्र होता है जो सबो का प्रिय होता है परन्तु, अंहकार युक्त व्यक्ति उदण्ड होता है जो किसी का प्रिय नहीं होता। वैसे शरीरधारी को पूर्णतः अंहकार रहित होना अत्यन्त कठिन है क्योंकि पूर्णतः अंहकार शून्य होना उस सर्वशक्तिमान के ही वश की बात है तथापि हम पूर्णतः नहीं तो अंशतः अंहकार रहित हो ही सकते है।

अपने अध्ययन से पाया है कि पूर्व में जितने आततायी राक्षस हुए, सभी बहुत ही बड़े अहंकारी हुए। उनके अहंकार मर्दन करने के लिए ही भगवती का प्रादुर्भाव हुआ, राम या कृष्ण अवतरित हुए।

जैसे पेड़–पौधों का पोषण जल से होता है वैसे ही अंहकार अनेकानेक अवगुणों का पोषक हैं। पंच महापाप (यथा झूठ, चोरी , नशा , हिंसा और व्यभिचार कराने का कारक भी यही अहंकार है। इसी अंहकार की तुष्टि हेतु सांसारिक लालसा /लोभ का उदय होता है। उनकी पूर्ति हो जाने पर अहंकारी के अहं भाव की वृद्धि होती है। लालसा/लोभ की पूर्ति नहीं होने पर अंहकारी को क्रोध एवं द्वेष की उत्पत्ति होती है तथा मोह रूपी अन्ध कूप में गिरने के कारण कुछ भी गलती करने को बाध्य होता है। इसलिए सदा इस अंहकार रूपी रोग से सावधान रहना चाहिए।

कहते है कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर देव और दानव स्वभाव विद्यमान रहता है। मेरे विचार से जिसके पास जितनी अधिक मात्रा में अंहकार होता है, उसमें उतनी ही अधिक दानवी प्रवृति होती है। इस दानवी प्रवृति को कम करने की विधि है। इसे सभी धर्म सम्प्रदायों में किसी–न–किसी रूप में (यथा कीर्तन नर्तन, योग, ध्यान, जप,तप, पूजा–पाठ, इबादत, नमाज इत्यादि) बताया गया है। सिर्फ उस पर श्रद्धा और विश्वास के साथ चलने की बात है। श्रीमद्भागवदगीता के द्वादश अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने भी अहंकार को प्रमुखता से त्यागने को कहा–

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करूण एव च। निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़ निश्चयः। मय्यर्पित मनोबुद्धिर्यो मदभक्तः स मे प्रियः।।
ऐसे निरहंकारी व्यक्ति को भगवान ने अपना प्रिय बतलाया है। ●

Scanned with AnyScanner

'प्राणायाम' एक अनुभव



श्री राजेन्द्र कुमार
वरिष्ठ लेखाकार
अनुभाग प्रभारी, हिन्दी कक्ष

हम अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए तरह-तरह के भोज्य पदार्थ एवं जल लेते हैं। हमारे शरीर को जो उर्जा भोज्य पदार्थ एवं जल से मिलती है वही उर्जा वायुमंडल से आक्सीजन के रूप में हमें शत्-प्रतिशत मिल जाती है।

उदाहरणस्वरूप हम उस सन्यासी/तपस्वी को लें जो बिना कुछ खाए-पिए महीनों/सालों तक तपस्या में लीन रहता है तथा उस तपस्या के दौरान भी उसके शरीर का ओज बना रहता है अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन नहीं दिखता है।

शरीर में उर्जा की कमी के कारण या पाचन तंत्र कमजोर पड़ जाने के कारण हमारा शरीर भोज्य पदार्थ से 40 प्रतिशत ही उर्जा ले पाता है। 60 प्रतिशत उर्जा बेकार (wastage) चला जाता है।

इसका एक छोटा सा उदाहरण मैं पेश करता हूँ :- तीन श्रेणी के लोग हैं जो एक ही प्रकार का भोजन करते हैं लेकिन उन्हें उर्जा अलग-अलग मिलती है। क्यों ?

निम्नलिखित सारिणी (चार्ट) द्वारा स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

व्यक्ति/श्रेणी	उम्र/सीमा	भोज्य पदार्थ (बराबर मात्रा)	उर्जा की प्राप्ति
पहली श्रेणी	25 वर्ष	चार रोटी, दूध	100 प्रतिशत
दूसरी श्रेणी	45 वर्ष	चार रोटी, दूध	70 प्रतिशत
तीसरी श्रेणी	75 वर्ष	चार रोटी, दूध	40 प्रतिशत

75 वर्ष वाले व्यक्ति द्वारा कपाल भाति करने से पेट के भीतर के सभी अंगों (जैसे पेट, लीवर, आंत आदि) का व्यायाम (oxygen generated exercise) होता है। व्यायाम होने से वह इतना मजबूत हो जाता है कि उसका सभी अंग (जैसे पेट, लीवर, आंत आदि) 25 वर्ष वाले व्यक्ति की तरह हो जाता है। तत्पश्चात् उसके शरीर को वही उर्जा मिलनी शुरू हो जाती है जो 25 वर्ष वाले व्यक्ति को मिलती है।

कपाल भाति करने से पेट के भीतर के अंग (Parts) में 15 मिनट के बाद एक ऐसी गर्मी पैदा होती है जो शरीर के भीतर के अवांछित तत्व को स्वांस के साथ बाहर निकालने में मदद करता है। अवांछित तत्व इतना सूक्ष्म रूप में बाहर निकलता है कि हम उसे देख नहीं सकते। तत्पश्चात हमारे शरीर के भीतर एक ऐसी उर्जा का संचार होता है जो हमारे शरीर एवं मन को 10-15 वर्ष पहले की स्थिति में लाकर खड़ा कर देता है।

सौफ्टवेयर (Software) -प्राणायाम करने से शरीर का सौफ्टवेयर ठीक होता है।

हार्डवेयर (Hardware) - व्यायाम करने से शरीर का हार्डवेयर ठीक होता है। जिस मशीन का सौफ्टवेयर ठीक रहता/होता है उसका हार्डवेयर अपने आप ठीक हो जाता है। प्रत्येक मानव का सौफ्टवेयर 100 प्रतिशत ठीक हो, यह प्राणायाम से ही सम्भव है।

Scanned with AnyScanner

भस्त्रिका एवं अनुलोम-विलोम करने से हृदय एवं फेफड़े (heart and lungs) का भी व्यायाम (oxygen generated exercise) होता हैं जो उसको इतना मजबूत कर देता है कि हृदय एवं फेफड़े की किसी भी प्रकार की बीमारी, अपने-आप छूमंतर हो जाती है।

प्राणायामों में मुख्य प्राणायाम भस्त्रिका, अनुलोम-विलोम एवं कपाल भाति है जो हमारे शारीरिक ढाँचा (body system) को सही रखने में सहायक होता है।

विधि

प्राणायाम करने से आधा घंटा पहले दो/तीन गिलास जल या अपनी क्षमता के अनुसार जितना अधिक पी सकते हैं, अवश्य पी लें और यदि संभव हो तो थोड़ा सुसुम पानी (जिनकी पेट में गड़बड़ी है) पीयें।

प्राणायाम करते समय एक दीपक जला लें और उस अग्नि रूपी दीपक की लौ को एकाग्रचीत होकर देखते हुए या अपने गुरू या ईश्वर को ध्यान में रखकर या आँख बन्द कर 'ॐ' का उच्चारण करते हुए प्राणायाम का अभ्यास करें।

प्राणायाम करने से हमारे भीतर का अंधकार (विकार) उसी प्रकार नस्ट हो जाता है जिस प्रकार दीपक के जलने से अंधेरा भाग जाता है। 'प्राणायाम' में वह शक्ति/नशा है जो शराब में भी नहीं है।

''ॐ'' का उच्चारण शरीर को ''प्राणायाम'' की मुद्रा में लाने की पहली सीढ़ी है। ''ॐ'' का उच्चारण करने के लिए सांस छाती के भीतर जितना अधिक हो, भर लें और फिर ''ॐ'' का उच्चारण करते हुए धीरे-धीरे बाहर निकालें।

''ॐ'' का उच्चारण '' प्राणायाम '' की पहली सीढ़ी है।

यदि आप गा सकते हैं तो एक छोटा सा भजन गायें

''ॐ'' बड़ा अनमोल मनुआँ ''ॐ'' - ''ॐ'' बोल।

- ❑ किसी भी प्रकार का गीत (भजन/राष्ट्र गीत/फिल्मी गीत आदि) गाना भी प्राणायाम का ही एक छोटा सा रूप है।
- ❑ जोर से ताली बजाना (clapping) पूर्ण एक्यूप्रेशर (complete acupressure) का कार्य करता है जो हमारे शरीर को पूर्णतः संचालित (activate) कर देता है। फिर शरीर को किसी प्रकार की अक्यूप्रेसर (acupressure) की आवश्यकता नहीं जान पड़ती है।
- ❑ प्राणायाम का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि हर इन्सान सत्य और अहिंसा का सहारा ले और इमानदारी पूर्वक अपना कार्य करे। गलत रास्ते पर चलने से मन हमेशा अशान्त रहता है जिसके कारण शरीर में असन्तुलन पैदा होता है। फलस्वरूप शरीर में अनेक प्रकार की बिमारियाँ जन्म लेती है/उत्पन्न होती हैं।

उदाहरण के तौर पर यदि किसी व्यक्ति के विरूद्ध केन्द्रीय जाँच ब्यूरो का मामला या इसी तरह का कोई और मामला प्रकाश में आता है जिसमें उसे सजा होनी होती है तो वह व्यक्ति या तो बीमार पड़ जाता है या किसी भयंकर बीमारी का शिकार हो जाता है। ऐसा क्यों ? क्योंकि भय होने की स्थिति में शरीर का प्रत्येक कण (Tissue) विकृति (disorder) में चला जाता है। इसलिए शरीर को 100 प्रतिशत सामान्य स्थिति में रखने के लिए ज़रूरी है कि इन्सान सत्य और अहिंसा का सहारा ले। सत्य और अहिंसा का सहारा लेने से प्राणायाम का पूर्ण लाभ शरीर को मिल जाता है।

Scanned with AnyScanner

प्राणायाम द्वारा रोगों से मुक्तिः (Disease cured by Pranayam)

1. एसनोफिलिया जो हमें करीब पन्द्रह वर्षों से था, प्राणायाम करने से बिल्कुल ठीक हो गया है।
2. 15 वर्षों का सर दर्द जो प्रत्येक एक या दो दिन पर बराबर हो जाया करता था (जिसके लिए हमें 24 घंटे जेब में दवा रखनी पड़ती थी) प्राणायाम करने से अब बिलकुल ठीक हो गया है।
3. पहले मैं नंगी आँखों से अखबार/समाचार पत्र आदि नहीं पढ़ पाता था अब मैं बिना चश्मा के ही पढ़ लेता हूँ। आखों की रोशनी में करीब 90% की वृद्धि हुई है। (सुधार हो गया है)
4. शरीर में उत्पन्न गाँठ, दबाने से दबता नहीं था (करीब 1 सेंटी मीटर के दायरे में पन्द्रह वर्ष से था) जो पूर्णतः (100 प्रतिशत) गायब हो गया है
5. पैर का दर्द जो करीब दस वर्ष से बराबर रहा करता था, दवा लेनी पड़ती थी। प्राणायाम करने से बिल्कुल ठीक हो गया है। अब दवा लेने की आवश्यक्ता नहीं है।
6. बाल में रूसी जैसा चकत्ते-चकत्ते जमता था जो करीब बीस वर्षों से था, बिल्कुल ठीक हो गया है।
7. हाथ उपर नहीं उठता था, दवा खाने का भी उसपर कोई असर नहीं हुआ, प्राणायाम के साथ-साथ व्यायाम (exercise) करने से जादू की तरह 100 प्रतिशत ठीक हो गया ।
8. पेट में कब्जियत (constipation) वायु विकार (gastic) जो हमें बचपन से था। प्राणायाम करने से बिलकुल ठीक हो गया है।
9. बाईं हाथ के बीच का नाखून काला होकर 25 प्रतिशत झड़ (टूट) गया था तथा सभी नाखूनों में खुरदरापन (deformity) भी आ गया था, अब बिलकुल ठीक हो गया है।
10. दौड़ते समय या गाड़ी चलाते समय (किसी भी मौसम में) करीब दस वर्षों से दाहीनी कान में बर्फ की तरह ठंढ लगती थी जो अब बिलकुल ठीक है।

अन्य लाभ :-

- ब्रह्मचर्य जैसी शक्ति का भी अभ्युदय होता है।
- सेक्स विकृति (sexual disorder) भी पूर्णतः ठीक हो जाता है।
- शरीर के भीतर का सारा ढाँचा (system/software) अपने आप ठीक हो जाता है।

आपका शरीर एक कम्प्यूटर है। कम्प्यूटर चलता है सौफ्टवेयर से। कम्प्यूटर का सौफ्टवेयर ठीक रहने की स्थिति में हम जितना चाहें उससे काम ले सकते हैं। ठीक

Scanned with AnyScanner

उसी तरह हमारे शरीर का सौफ्टवेयर (जैसे लीवर, आंत, फेफड़ा, हृदय आदि) यदि ठीक रहे तो हम जितना चाहें काम ले सकते हैं। आपका हार्ड वेयर (शरीर) जो सामने दिखाई देता है, सौफ्टवेयर के ठीक रहने से अपने आप ठीक रहेगा।

दिनांक मई 2008 में अपने पुत्र ''राहुल'' जिसकी उम्र आज करीब 18 वर्ष है, को छाती में तकलीफ हो गई। सोये-सोये या पढ़ते समय भी सांसें रुक जाया करती थी। डा० एस० एस० ठाकुर से दिखाया गया। डाक्टर ने स्पष्ट रूप से कहा कि इस बच्चे को जीवन भर ईनहेलर (inhaler) लेना पड़ेगा और एक महीने की दवा भी लिख दिया। दवा लिखते समय प्राणायाम करने का भी परामर्श दिया।

राहुल ने दूसरे दिन से ही प्राणायाम करना शुरु कर दिया। 'भ्रस्त्रिका', 'अनुलोम-विलोम' और 'कपालभाति' करीब डेढ घंटे तक लगातार प्रत्येक दिन सुबह में पन्द्रह दिनों तक करने के बाद वह करीब 90 प्रतिशत ठीक हो गया है। उसका प्राणायाम करना अभी भी जारी है। अब वह करीब 100 प्रतिशत ठीक हो गया है।

प्राणायाम की अवधि

	प्राणायाम	गति	भूमिका	समय
1.	भ्रस्त्रिका	मन्द/मध्यम/तीव्र	छाती	10 मिनट
2.	अनुलोम-विलोम	मन्द/मध्यम/तीव्र	छाती	10 मिनट
3.	कपालभाति	मध्यम/तीव्र	पेट	यथाशक्ति
4.	वाह्य प्राणायाम	मन्द और तीव्र	छाती	03 मिनट
5.	भ्रामरी	मन्द	मस्तिष्क	02 मिनट
6.	ओंकार-जप	अति निम्न	मस्तिष्क	05 मिनट
7.	नाड़ी-शोधन	सामान्य	छाती	05 मिनट

सत्य और अहिंसा का सहारा लेने से मन शांत रहता है फलस्वरूप शरीर की सभी मांसपेशियाँ (muscles) सुसज्जीत रहती है और उसमें कभी भी तनाव पैदा नहीं होता है। अतः प्रणायाम का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि इन्सान अपने जीवन में जो भी कार्य करे हमेशा ईमानदारी और सच्चाई पूर्वक करे।

योग से पूरे विश्व का स्वरूप बदल सकता है। अगले बीस वर्षों में सतयुग की शुरूआत होने वाली है। क्योंकि भारतवर्ष के लोग धीरे-धीरे योग की ओर कदम बढ़ाने लगे हैं। जिस दिन पूरा भारतवर्ष योगमय हो जाएगा उसी दिन से एक नये युग की शुरूआत होगी। और आज न कल पूरे भारतवर्ष को योगमय होना है क्योंकि सबको स्वश्थ रहना है।

अन्त में इस पत्रिका के माध्यम से सभी प्रेमी भाई-बन्धुओं को मैं कहना चाहूँगा कि आप भी योग कर स्वास्थ्य को 100 प्रतिशत लाभ उठायें और लोगों को भी प्रेरणा दें ताकि कोई भी व्यक्ति अनावश्यक रूप से बीमार न पड़े। ●

Scanned with AnyScanner

माँ का आशीर्वाद



श्री हरेराम प्रधान
वरिष्ठ लेखाकार

दीपू बचपन में बड़ा नटखट था। बराबर दूसरे बच्चों को तंग किया करता था। उसके उस आदत से उसके क्लास के बच्चे परेशान रहते थे। शिक्षक भी उसे उसके लिए दंड दिया करते थे। पर वह अपनी आदत से बाज नहीं आता था।

दीपू से स्कूल में उसके सहपाठी एवं शिक्षक परेशान रहते थे वहीं दूसरी तरफ घर में भी उसके परिवार के लोग परेशान रहते थे। खासकर उसकी माँ अत्यन्त परेशान एवं चिन्तित रहती थी। परन्तु, वह उसकी शैतानी को दूसरों से नहीं बताती थी। उसकी हरकतों को नजरअंदाज कर उसकी पसंद का खाना बनाकर उसे खिलाती थी। दीपू की हरकतों को नजरअंदाज करने के कारण उसकी माँ को घर के अन्य लोगों से बात सुननी पड़ती थी। सब लोग कहते थे कि तुम्हारी वजह से ही वह इतना शैतान हो गया है, वरना उसकी मजाल कि वह इतना शैतानी करता। बेचारी माँ सब लोगों की बातें सुनकर चुप ही रहती थी। अपने लाडले की करतूत से वह भी तो मन ही मन दुःखी रहती थी, परन्तु अन्य लोगों के सामने वह जाहिर नहीं करती थी। दीपू की माँ मन ही मन यह सोचकर खुश होती थी कि एक न एक दिन जरूर उसका बेटा अच्छा एवं बड़ा आदमी बनेगा। उसे अपनी दादी की कही हुई बचपन की बातें आज भी ज्यों की त्यों याद है कि "जो बच्चे बचपन में शैतानी करते हैं, दूसरों को तंग करते हैं, वे बड़ा अच्छा आदमी बनते है।" दादी की इन्हीं बातों के सहारे दीपू की माँ को उसके सारे गुनाहों को भुलाकर उसे सहनकर उसकी परवरीश करती थीं।

एक समय की बात है। दीपू के ननिहाल से कुछ लोग आये। दीपू की माँ उन लोगों की खातिरदारी में लग गई। तरह-तरह के व्यंजन बनने लगे। मिठाई एवं नमकीन की मंगाये गये। वे लोग व्यंजन , मिठाई एवं नमकीन का स्वाद ले लेकर खाने लगे एवं उसकी तारीफ करने लगे। दीपू की माँ अपने मायके वालों के आवभगत में ऐसी रमी कि अन्य लोगों की चिन्ता भूल गई (थोड़ी देर के लिए ही सही) यह दीपू को पसंद नहीं आया एवं वह आग- बबूला हो गया । माँ को कुछ खरी-खोटी भी सुनाया। बेचारी माँ सुनकर रह गई। उसके सामने तो कुँआ एवं पीछे खाई वाली मुहावरा नजर आने लगा। एक तरफ उसके मायके वाले है एवं दूसरी तरफ दीपू, उसका लाइला। सभी का पलड़ा एक तरफ एवं दीपू का पलड़ा अकेले भारी पड़ता था। बेचारी माँ किसी तरह से समस्या का समाधान निकाल ली।

दीपू अब बड़ा हो गया था। कॉलेज में दाखिला हो गया था। बचपन का नटखट दीपू अब शहर में मन लगाकर पढ़ता था। आज उसकी माँ उसके पास शहर में नहीं थी। घर से उसके मन पसन्द पकवान एवं अन्य सामान बनाकर उसके पापा के हाथों भेजवा दिया करती थी। दीपू और उसका एक दोस्त दोनों मिलकर एक कमरा किराये पर लिये थे और उसी में पढ़ते थे। उसका दोस्त भी गरीब था। गरीबी का अहसास दोनों को था। इसलिए मन लगाकर पढ़ते थे।

Scanned with AnyScanner

दीपू बी०ए० की परीक्षा पास कर गया। अब उसे नौकरी की चिन्ता होने लगी। पापा कहते थे कि नौकरी की तलाश करो और उसके लिए तैयारी करो। नौकरी की चिन्ता तो उसे भी थी, पर साधारण नौकरी वह नहीं करना चाहता था। वह आई०ए०एस० बनना चाहता था। बचपन से उसकी चाहत थी कि वह एक दिन आई०ए०एस० बनकर परिवार , गॉव एवं जवार का नाम रौशन करें। इसके लिए वह लगन से पढ़ाई करता था, तथा उसी के अनुरुप तैयारी भी करता था। दीपू अब पहले वाला दीपू नहीं था जो बचपन मे नटखट एवं शरारती था तथा किसी की बात नही मानता था। आज वही दीपू पढ़ाई के सिलसिले में घंटो-घंटों एवं रातो रात जागता रहता है तथा उसकी ऑखो की नींद मानों गायब हो गई है। उसका एक मात्र लक्ष्य आईएएस बनना है, चाहे इसके लिए जितनी मेहनत करनी पड़े वह उससे पीछे नहीं हटना चाहता है। दीपू कभी भी ट्यूशन या कोचिंग नहीं किया, वह बराबर घर पर ही अपने किराये के कमरे में अपनी पढ़ाई एवं तैयारी में जुटा रहता है। दोस्तों से मिलना -जुलना एकदम कम कर दिया है। बाहर घूमना फिरना भी कम हो गया है। सिर्फ एक धुन है प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी । पी०टी०परीक्षा होती है। दीपू उसमें पास हो जाता है। अब उसे फाईनल परीक्षा देनी है। उसके लिए वह लगन से पढ़ाई में जुट जाता है। धीरे-धीरे फाईनल परीक्षा का समय भी आता है। दीपू उसमें सम्मिलित होता है। फाईनल परीक्षा देकर दीपू घर चला जाता है।

आज दीपू के घर पर भारी भीड़ जमा है। लोग पूछ रहे है क्या बात है, इतनी भीड़ क्यों है। इसी बीच एक नौजवान अखवार दिखाता है तथा गर्व से कहता है कि आज अपना दीप ,,दीपू नहीं रहा बल्कि दीपक कुमार आईएएस बन गया है। सब लोग उसके पापा को बधाई देते हैं। मिठाई बँटती है। लोग खुशी मनाते है। सभी की जुबान से यही निकलता है कि बेटा हो तो दीपू जैसा । जो गरीबी से जीवन व्यतीत करते हुये भी आज आईएएस बन गया। इसी को लगन कहते है। जिसे देखो वही दीपू का गुणगान करते नहीं थक रहा है।

सब लोग दीपू को खोज रहे है, परन्तु दीपू दिखाई नहीं दे रहा है। दीपू को जैसे ही पता चला कि वह आईएएस परीक्षा पास कर गया है तथा कलेक्टर बन गया है दौड़ा-दौड़ा अपनी माँ के पास गया। यह क्या ? माँ की आँखो से आँसू निकल रहे है। दीपू माँ के चरणों में गिरकर पूछने लगा "माँ तुम क्यों रो रही हो, सभी लोग खुश है ओर तुम रो रही हो!" क्या तुम्हें खुशी नहीं है ? माँ की आँखो से अविरल आँसू बह रहे थे। माँ बोली कि नहीं रे पगले, ये दुःख के नहीं, खुशी के आँसू हैं, जो अनायास ही निकल गये हैं। आज मुझसे ज्यादा इस दुनिया में दूसरा कोई खुश नहीं होगा। "माँ की बातें सुनकर दीपू की आँखो से भी आँसू बहने लगे एवं उस आँसू से माँ के पैर धुलने लगे। दीपू माँ के चरण में लिपटे हुये भर्राई आवाज में कहने लगा-माँ , तेरे ही आशीर्वाद का फल है कि आज हम इस मुकाम पर पहुँचे हैं, तथा आज तुम्हारा बेटा आईएएस बना है। माँ का आर्शीवाद दिल से मिला, जिसका फल आज सभी लोग देख रहे हैं। ●

Scanned with AnyScanner

शिर्डी के महाराज - एक संस्मरण



श्री अनिरुद्ध राय
पर्यवेक्षक

एक महानुभाव ने 'श्री साई सच्चरित' (हिन्दी) संस्करण मुझे पढ़ने के लिए दिया। यह पुस्तक ज्ञान प्रदान करने वाली है। पढ़ने पर बहुत जानकारी प्राप्त हुई।

मैने जाना कि शिर्डी के साई बाबा की महिमा बहुत है, वे भक्त वत्सल हैं तथा अपने भक्तों का बहुत ख्याल रखते हैं। अपने खाली समय में मैं श्री साई चरित पुस्तक पढ़कर ज्ञानार्जन करता हूँ। वास्तव में यह पुस्तक न होकर एक ग्रन्थ है।

मै 'श्री साई चरित' पुस्तक पढ़ रहा था उसी समय कुछ कार्यवश मेरे कार्यालय के एक सेवा निवृत्त अधिकारी मुझसे मिलने आए। उनका कुछ काम था जिसमें मैंने उनकी सहायता की। वे महाशय कार्य सम्पादित होने पर प्रसन्न मन चले गए। मै भी जल पीने बाहर गया। करीब आधा घंटा में लौटा तो पाया कि वे महाशय रास्ते में खड़े थे। मै आधा घंटा से आपके इन्तजार में खड़ा हूँ। मैने उन्हें बैठाया। कहा कि कहिए क्या बात है। सोचा कि महाशय आफिस की कोई बात करेंगे।

उन महाशय ने एक आपबीती घटना सुनाई जिससे मै रोमांचित हुए बिना नहीं रह सका।

उन्होंने मुझसे पूछा कि आपने अपने सामने यह 'श्री साई सच्चरित' ग्रन्थ रखा है। क्या आप भी साई भक्तों में से है?

मैंने कहा कि मै सभी देवी, देवता को मानता हूँ, पूजता हूँ, आराधना करता हूँ तथा देव स्थानों के दर्शन करता रहता हूँ। इससे आत्मा को सुख की अनुभूति होती है तथा ज्ञानार्जन करता रहता हूँ। अभी मै शिर्डी देव स्थान श्री साई बाबा के दर्शन करने जाना चाहता हूँ।

इस पर उक्त महाशय ने श्री साई कृपा की आपबीती घटना बताई, जिसे मै आगे बयान कर रहा हूँ।

उक्त महाशय ने अपनी पुत्री की शादी एक सम्पन्न परिवार में तय की थी। वे पूरे परिवार के साथ शादी की तैयारियों में व्यस्त थे। उन महाशय का परिवार साई भक्त हैं। वे करीब-करीब महीना में एक बार "शिर्डी" की यात्रा कर ही आते है। शादी की तैयारी करते समय वे इस चिन्ता में थे कि कहीं कोई कमी नहीं रह जाय तथा इतने रूपयों का इन्तजाम कैसे, कहाँ से किया जाय। साथ ही यह भी सोचते थे कि चलो यह काम तो साई बाबा पूर्ण कर देंगे। वे हरदम साईं-बाबा का ध्यान करते थे तथा बाबा को याद दिलाते थे कि बाबा इस यज्ञ को आप को ही पार लगाना है। (पूर्ण करना है) केवल आपका ही आसरा है।

Scanned with AnyScanner

शादी की तैयारी करनी थी, लड़के वालों की तरफ से कुछ भी मांग नही रखी गई थी। उनलोगों का कहना था कि मेरी खातिरदारी बढ़िया से होनी चाहिए। बिहार में लड़की की शादी एक खर्चीला कार्यक्रम है। इसी चिन्ता में एक दोपहर के समय वे लोग शादी की तैयारियों में व्यस्त थे कि उनलोगो को लगा कि मकान के बाहर का गेट कोई पीट रहा है। उन लोगो ने पहले समझा कि कोई सब्जी वाला या फल बेचने वाला होगा। दरवाजा ढक ढकाकर चला जाएगा। लेकिन जब आवाज लगातार होती रही तो उनकी पत्नी ने बाहर जाकर देखा तो पाया कि गेट पर एक महात्मा खड़े है जो एक हाथ में कमण्डल, एक हाथ में एक लकड़ी का डण्डा तथा माथे पर एक साफा बाँधे हैं तथा महात्माओं वाला ''लवादा'' पहन रखे हैं। उन महाशय की पत्नी को देख कर महात्मा जी ने कहा कि तू अपना काम कर, चिन्ता मत कर, सभी काम तुम्हारा भगवान पूरा करेगा। मैं तुमसे कुछ मांगने नहीं आया हूँ। मैं तो केवल यह कहने आया हूँ कि तेरी सुपुत्री की शादी बढ़िया से होगी। शादी होने के बाद तुम ''शिर्डी'' जरूर जाना तथा साई बाबा के दरवार में माथा टेकना। यह कह कर महात्मा चले गए।

उक्त महाशय की पत्नी अपने घर में आयी। जब उन्होंने घर में प्रवेश किया तो दरवाजे पर ही ठिठक कर खड़ी हो गई क्योंकि उन्हें लगा कि जो तस्वीर सामने घर में रखी है वही तो उनके दरवाजे पर बाहर महात्मा रूप में खड़ी थी, जिनसे वे बात कर लौटी हैं। यह सोच कर उनके दानों नेत्रों से आँसू निकल आए। पति ने पूछा क्यों रो रही हो। तो उन्होनें पूरी बात उन्हें बताई तथा कहा कि बताइए श्री साई मेरे दरवाजे पर आए और मैं उन्हें पहचान नहीं पाई।

यह सोचकर दोनों दरवाजे पर दौड़े परन्तु वहाँ कोई नहीं था। दोनों आदमियों ने उस स्थल की मिट्टी को प्रणाम किया। साथ ही सोचने लगे कि महात्मा को घर के भीतर बुलाते कुछ खिलाते, साईं आए, दर्शन दिए और चले गए।

यह कहकर उन महाशय ने मेरे सामने रखी पुस्तक उठाकर माथे से लगाया, दिल से लगाया तथा प्रणाम कर टेबुल पर रख दिया। मुझे भी उन्होनें कहा कि आप शिर्डी जरूर जाइए तथा वहाँ से आकर प्रसाद तथा साई के धुनी की राख मुझे भी दीजिए।

मैंने कहा कि देखें कब जाते है क्योंकि किसी भी देव स्थल पर आदमी तब तक नहीं जाता है जब तक उनके दर्शन करने के लिए बुलावा नहीं आता है।

मैं सोचता हूँ कि मेरा बुलावा कब आता है, ताकि पूरे परिवार के साथ मैं उनके दर्शन करूँगा। समय पाकर मैं पूरे परिवार के साथ शिर्डी गया था।

यह वृतांत मैंने लिखा इसमें शंका की कोई बात नहीं है। भगवान भक्त-वत्सल है तथा जिन्हें चाहते हैं जैसा कि वे ए0जी0कॉलोनी, शेखपुरा में उन महाशय के घर पधारे थे।

मेरा भी मकान उसी कॉलोनी में है। मेरी कॉलोनी धन्य हो गई क्योंकि श्री सांई बाबा की चरण धूलि मेरी कॉलोनी में पड़ी। ●

Scanned with AnyScanner

ऐसा क्यों ?

श्री आशानन्द ठाकूर
वरीय लेखा अधिकारी

कई दिनों से ठीक से सो नहीं पा रहा हूँ,
जब भी सोने की कोशिश करता हूँ
सामने आ जाता है उसका चेहरा।
उसकी मासूम बड़ी –बड़ी आँखे
खिलता हुआ गोरा रंग
माथे पर लाल बिंदी और
खुले हुए गुलाबी होंठ।
कितना भी कोशिश करता हूँ उसे
भुला नहीं पाता हूँ।
हाँ , दो दिन पहले मैंने उसे देखा था मुर्दा घर में
जब पोस्टमार्टम करने के लिए लाया गया था उसे मेरे पास।
मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह मर चुकी है।
दो दिन पहले हुए शहर के दंगे में
वह हो गई थी कुछ लोगो के पागलपन का शिकार
न मालूम व हिन्दू थी या मुसलमान
न मालूम वह हत्यारा कौन था,
क्या थी उसकी पहचान।
उसकी फटी हुई बड़ी –बड़ी आँखे मुझसे पूछ रही थी
‘‘मेरी क्या गलती थी ! क्या मुझे जीने का हक नहीं था!
मैंने तो कभी भी किसी को कोई दुःख नही दिया था।
मै एक नर्स थी, सेवा मेरा धर्म था।
वगैर जात धर्म को ध्यान मे रखते हुए बीमारों की सेवा करती थी,
फिर मेरे साथ ऐसा क्यों ?
सोते जागते उसके इस क्यों का जबाब पिछले
दो दिनों से मैं खोज रहा हूँ
लेकिन खोज पाने में मैं असमर्थ हूँ
अगर आपके पास जबाब हो तो कृपया बतायें।
मैं भी जानूँ , वह भी जाने और दुनिया भी जान सके। ●

Scanned with AnyScanner

दुलहन

प्रिया राज,
सुपुत्री–श्री राम बली सिंह
अनुभाग अधिकारी

जब कोई दुलहन जलती है तो
सब पूछते है –वह क्यों जली ?
यह नही पूछते कि –वह कैसे जली ?

कौन था उस अबला का दुश्मन
किसने छीना उससे उसका जीवन
किसने चंद पैसों की खातिर
चढ़ा दी उसकी बलि ?

दहेज में जब नहीं मिली कार
छीन लिया उसका संसार
आखिर किस गलती की
सजा उसे मिली ?

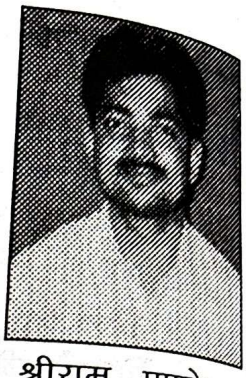
कौन है इसका जिम्मेदार
वह नहीं या उसका परिवार
या फिर यह भ्रष्ट , निर्दयी समाज
जो पुराने विचारों में ही जीं रहा आज ?

फिर भी, एक नारी, नारी से पूछ रही है
कि वह कौन है, उसका अपना कौन है ?
वह जो जन्मदाता है,
या वो जो उसे अग्निभेंट चढ़ाता है

इन्ही कश्मकश से सवालों को निगाहों में छिपाए,
न जाने कितने दर्द अपने आँचल में समाए
हर गम को वह हँसकर सहती है।
फिर भी जब कोई दुल्हन जलती है
सब पुछते है वह क्यों जली
यह नहीं पूछते कि वह कैसे जली ? ●

Scanned with AnyScanner

यह आपने क्या कर डाला सम्पादक जी



श्रीराम पाण्डेय,
अनुभाग अधिकारी

''क्या इस बार 'चेतना' पत्रिका के लिये कोई रचना नहीं दीजियेगा ? पत्रिका के सम्पादक महोदय ने व्यग्रता से पूछा।

''वैसे तो मेरे पास पहले की लिखी हुई कई पुरानी रचनाएँ हैं पर सोचना हूँ कि कोई नई रचना आपको दूँ। लेकिन क्या करूँ ? कोई प्लॉट ही नहीं मिल रहा। आखिर लिखूँ तो क्या लिखूँ ? मैंने अपनी मजबूरी बताई।

हँसने लगे सम्पादक जी।. ''प्लॉट तो आपके आस-पास ही बहुत से हैं। सबसे अच्छा तो यह होगा कि अपने किसी पुराने प्रेम प्रसंग को ही मानस पटल पर लाईये और लिख डालिये।''

अब मैं उन्हें कैसे बताऊँ कि मेरी शादी के पहले न किसी लड़की ने मुझसे प्रेम किया और न मैने किसी लड़की से । शादी के बाद सोचा कि पत्नी से ही प्रेम कर लेने में क्या हर्ज है। किया भी। पर एक आध-साल बाद वह भी हवा हो गया। नमक और आटा प्रेम पर भारी पड़ने लगे। और प्रेम रिपु मुन्ना मुन्नी भी तो बाद में आ टपके।

दिमाग को खूब कुरेदने पर मुझे बहुत पहले का बल्कि बचपन के तुरत बाद में किया गया प्रेम याद आने लगा। तब मैं हाई स्कूल जाना शुरू किया था। साथ ही शुरू हो गया था सिनेमा देखना। बहुत सारी फिल्में देखने लगा मैं । धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि हिन्दी फिल्मों की एक तारिका हेमा बहुत अच्छी लगने लगी है। हाल यह हो गया कि मैं हेमा की कोई भी फिल्म देखे बिना चैन नहीं लेता था। सिनेमा हॉल में फिल्म लगी नहीं कि मैं टिकट लेने के लिए लाईन में लग जाता। घर से स्कूल जाने या नास्ता वगैरह के लिए जो पैसे मिलते, उनसे फिल्म का टिकट खरीद लेता। भूखा रह लेना मुझे मंजूर था, हेमा की फिल्म देखे बिना नहीं। उसकी हर अदा, एक -एक मुस्कान पर मैं ऐसा मुग्ध होता कि होशोहवास खो बैठता। लगता कि मैं कोई फिल्म नहीं देख रहा, साक्षात हेमा मेरे सामने है। देवानंद या धर्मेन्द्र नहीं, मैं उसके साथ गाना गा रहा हूँ। हम दोनों (अजी मैं और मेरी हेमा) बाँहों मे बाँहें डाल बागों -वादियों में, पहाड़ों पर या किसी रमणीक नीली झील के किनारे घूम रहे हैं। मैं उसे अपने प्रेम का आमंत्रण दे रहा हूँ, वह स्वीकारोक्ति की मुद्रा में इनकार कर रही है । पर वाह री मेरी किस्मत। अचानक नथूनों में दुर्गन्ध भर जाने के कारण स्वप्न टूटा। देखा कि बगल की कुर्सी पर एक कृष्णवर्णा विशाल काया मुँह फाड़े अपनी दंत पंक्ति दिखा रही है। लग रहा है मानो किसी अंधेरी-काली गुफा में कुछ श्वेत कीट अठखेलियाँ कर रहे हैं। खैर, आगे की बात सुनिये। पत्र पत्रिकाओं या समाचार पत्र में जहाँ कहीं भी हेमा की तस्वीर नजर आती, काटकर अलग कर लेता। एक बार तो मार भी खानी पड़ी। फिल्म का पोस्टर जो फाड़ रहा था, सिनेमा हॉल के सामने की दिवार से। 'जॉनी मेरा नाम' फिल्म देखने के क्रम में पता चला कि इस फिल्म की सुटिंग नालंदा एवं राजगीर में की गई है और उस समय हेमा बीस वर्ष की नवयौवना, लबालब सौन्दर्य से भरी हुई प्रतिमूर्ति थी। फिर तो उसका लालित्य

Scanned with AnyScanner

मेरे मन आंगन में बिछता चला गया। काश मै भी सूटिंग के समय वहाँ होता, अहा। फिर अंगुली पर जोड़कर अनुमान लगाया कि अगर उस समय होता भी तो हेमा का क्या कर लेता। तब मैं ज्यादा से ज्यादा एक दो साल का ही तो था (वैसे बीस-पच्चीस साल का भी होता तो क्या कर लेता?) आज मैं समझ सकता हूँ पर उस समय कहाँ से लाता ऐसी समझ। खैर, मैं फिल्म पूरी तरह देख भी न पाया। नालंदा या राजगीर जाकर सौन्दर्य की मेनका अर्थात हेमा के पाँव जहाँ -जहाँ जमीन पर पड़े थे, धरती को चुमे थे, वहाँ की धूली को माथे में पोतने के लिए आतूर हो उठा। अगले ही दिन मैं राजगीर जा पहुँचा । एक गाईड भी रख लिया। आखिर उसी से तो पता चलता कि हेमा के पाँव कहाँ-कहाँ की धरती को छूऐ थे। पता नहीं, गाईड पूरी तरह जानता था या यों ही हवा दे रहा था। पर जहाँ-जहाँ वह कहता गया मैं माथा नवाता गया। उस झूला पर भी चढ़ा, कभी जिस पर हेमा बैठी थी। फिर स्वप्न में खो गया। हेमा मेरी गोद में बैठी धीरे - धीरे एक प्यारा सा गीत गुनगुना रही है (चतुर पाठक मेरी तरह अंगुली पर जोड़ रहे होंगे कि अगर ऐसा कुछ होता भी तो सन् 1970 में हेमा मेरी गोद मे नहीं, मैं उसकी गोद में उँचाई पर से गिरने के भय से डरा सहमा दुबका रहता)। मैं बिना पलक झपकाए उसके रूप लावण्य को पीता जा रहा हूँ। और भी न जाने कैसी-कैसी कल्पनाओं में डूबता उतराता रहा। झूले में जोर की हरकत हुई तब मैं स्वप्न से बाहर आया । देखा तो झूला के तार किसी खंभे की चरखी से रगड़ खाते हुए गुजर रहे हैं। प्रकृति की गोद में बसे राजगीर की छटा कितनी मनोहारी, कितनी रमणीय है, जो लोग वहाँ गये हैं, जानते हैं। पर मुझे राजगीर या उसकी रमणीयता की फिक्र कहाँ। रमणी है तो बस एक हेमा। सच कहूँ तो मैं यहाँ तक सोचने लगा कि मुझसे बीस-पच्चीस साल बड़ी हुई तो क्या हुआ? यदि आज भी हेमा मुझे शादी का आमंत्रण दे तो खड़े-खड़े ही उससे शादी कर लूँ।

बहुत बाद में मुझे पता चला कि हेमा की शादी हो चुकी है । तब मेरा क्या हाल हुआ होगा, आदरणीय पाठक भली-भांति समझ सकते हैं । हे परमात्मा, सब कुछ बर्बाद हो गया। मैं कहीं का नहीं रहा। न मुझे रात का पता चलता न दिन का। घर में कुछ खाने को मिला तो खा लिया, वरना भूखे ही सो जाता। माँगता किसी से नहीं। घर के लोग मेरी मनोदशा को समझ नहीं पा रहे थे (समझते भी तो क्या कर लेते)। मैं अंतर्मुखी किस्म का व्यक्ति हूँ। अपनी खुशी या अपना दुःख किसी के साथ नहीं बाँटता।

बात जब चरम पर पहुँच जाती है तो धीरे -धीरे विराम की स्थिति बनने लगती है या फिर वह (बात) पूरी तरह खत्म हो जाती है। मुझे पता चला कि अभागी हेमा का एक पुत्र ढाई किलो का हाथ लिये मरने- मारने को बेताब रहता है। अगर उसे मेरे दुस्साहस का भनक लग जाय तब मेरा क्या होगा, मैं ही समझ सकता हूँ। यौवन शुरू होने से पहले ही वीरगति पाना मैं कतई नहीं चाहता। और फिर मेरी शादी भी तो हो गई। पत्नी के होते हुए कौन माई का लाल है जो किसी अन्य लड़की या महिला से प्रेम करने की बात तक सोच सके।

आज सम्पादक जी के कुरेदने पर लगता है कि मेरा सनातन प्रेम मुझे फिर झकझोर रहा है। एक हुक सा मन में उठा है। चोर निगाहों से देखता हूँ कि बगल की कुर्सी पर बैठी मेरी पत्नी सास-बहु वाला कोई श्रृंखला नाटक देख रही है। शायद अब खत्म होने वाला है। लिखना बंद करने में ही मेरी भलाई है। उस ढाई किलो वाले हाथ से भी अधिक मेरी पत्नी के हाथों में ताकत है, मैं जानता हूँ। ●

Scanned with AnyScanner

माँ

गौरव आनंद
सुपुत्रः श्री बंशीधर मिश्र
सहायक लेखा अधिकारी

माँ एक आशा है।
एक बच्चे की जिज्ञासा है।
माँ वीर है।
जीवन के इस सागर का एक तीर है।
माँ मारती है–दुलारती है –पुचकारती है।
माँ ईश्वर की अद्‌भुत आरती है।
माँ एक बच्चे का खिलौना है।
बिन माँ के सब सूना है।
माँ दुर्गा का अवतार है।
माँ नमन तुझको सौ–सौ बार है।
माँ बच्चे को संवारती है।
माँ कलियुग के अँधेरे में एक बाती है।
माँ सम्पूर्ण है, वह है तो जीवन परिपूर्ण है।
माँ कभी सख्त, कभी प्यारी है।
इसलिए कहता हूँ; ईश्वर का दूसरा रूप नारी है। ●

Scanned with AnyScanner

आज का सिनेमा

गौरव आनन्द
सुपुत्र–श्री बंशीधर मिश्र
सहायक लेखा अधिकारी

हम इक्कीसवीं सदी के लोग हैं,
टेलिविजन, रेडियो और सिनेमा का करते भरपूर उपयोग है।
सिनेमा ने इस युग में लाया उमंग है।
पर अश्लीलता के इस नंगे नाच से हम सचमुच दंग है।
इक बात है सुनानी, कई बर्षो पुरानी,
दो दिलों के मेल को दो फुलों से हमने जानी।
पर आज हम मॉडर्न हैं,
स्टाईल के नए–नए पैटर्न है।
फूलों को भूलो , होठों को ले लो,
हर दो मिनट पे एक चुंबन ले लो
आज हर फिल्म की यही कहानी है,
कभी उदिता तो कभी रानी है।
पहले से वो इतना सब था,
क्या यह अपने–आप में कम था।
जी हाँ भाइयों, ये है हमारे इमरान हासमी।
पप्पी लहरी , सीरियल किसर, न जाने कितने नाम कमाए
पर इनके तौर तरीके भइया हमें समझ न आए,
पैसों के लालच में निर्देशक भाइयों इतने बेशर्म मत हो जाओ,
के कहानी के बिना बस चुम्बन से काम चलाओ,
अरे तुम्हारे घर में भी बहु–बेटियाँ होगी,
पर क्या साथ बैठकर आपकी ये नौटंकी देखेगी।
बेशर्मियत की तो गीतकार भइया, आपने हद ही कर दी।
दो पैसों के गाने में ये कैसी बात कर दी ।
पूछते हो–चोली के पीछे क्या है।
लगता है तुममें न शर्म है न हया है।
अरे पूछना है तो पूछो अपनी माँ से,
जो महान है इस पूरे जहाँ से
अरे वहाँ तो एक बीबी का प्यार, एक माँ की ममता,
एक बहन की मान–मर्यादा है।
जिसकी रक्षा के लिए उसने तुम्हें राखी बाँधा है।
वक्त है सुधर जाओ
इतने वेशर्म भी न हो जाओ कि बीबी और
बेटी में फर्क न कर पाओ।• ●

Scanned with AnyScanner

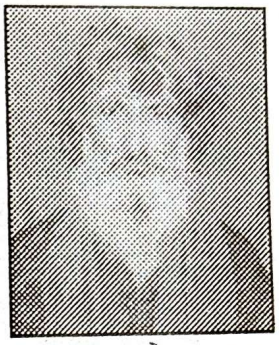
जिंदगी 'इक' पल है

श्री यतीश चन्द्र वर्मा
अनुभाग अधिकारी

भूल जाना चाहता हूँ 'उन पलों को
यादों में सजो लेना चाहता हूँ 'इन पलों को'
वह भी 'इक पल था'
यह भी 'इक पल' है
कभी 'इक पल " में जिदंगी बन जाती है,
कभी जिदंगी 'इक पल बन जाती है,
इन पलों में ही कुछ खो देते है हम,
इन पलों में ही कुछ पा लेते है हम
और इन पलों में ही 'कुछ खोकर' पा लेते है हम।
हँसना भी 'इक पल ' है
रोना भी 'इक पल ' है
मिलना और बिछुइना भी 'इक पल' में है।
पल-पल के 'इक पल ' में
अभिमान भी है, स्वाभिमान भी है,
सत्य भी है, असत्य भी है
अपने है और पराये भी है
पल-पल के 'इक पल' में
हम नहीं छोड़ पाते हैं 'अभिमान ' को
हम नहीं छोड़ पाते हैं 'असत्य को'
तभी तो 'इक पल' में अपने भी हो जाते हैं बेगाने।
जिदगी के पहले भी 'इक पल' है।
और जिदगी के बाद भी
लेकिन मौत के पहले जो पल है
वह 'पल' क्या 'मौत' के बाद भी है ? ●

Scanned with AnyScanner

राष्ट्रीय



श्री आशुतोष झा
वरिष्ठ लेखाकार

हर एक भारतवासी की आँखों का है यह तारा
सारे जहाँ से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारा
रहेगा उँचा सदा तिरंगा
ये है अपना कौमी झंडा
वीर भगत ने इसकी खातिर
चूम लिया फाँसी का फंदा
जान गंवादी मगर न छोड़ा इन्कलाब का नारा
सारे जहाँ से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारा
किसी को है गीता से उलफत
और कहीं कौआ की तेलावत
कोई करे भगवान की पूजा
कोई करे अल्ला की इबादत
इस धरती पर मंदिर मस्जिद गिर्जाघर गुरूद्वारा
सारे जहाँ से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारा
कबीर, तुलसी का ये चमन है
नानको चिश्ती का गुलशन है
राम और लक्ष्मण की धरती
वीर जवानों का ये वतन है
भारत टकराने वाला जंग हमेशा हारा
सारे जहाँ से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारा
दुश्मन ने गर की नादानी
जिसने भी लड़ने की ठानी
हम भारत माता की खातिर
देगें बढ़के हर कुर्बानी
कोई आंच वतन पर आये हमको नहीं गँवारा
सारे जहाँ से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारा
ये है मेरी जान बता दो
इस धरती की शान बता दो
आशुतोष जहाँ वालों को
भारत की पहचान बता दो
ताज हमारा, लाल किला गंगा-जमुना का धारा
सारे जहाँ से प्यारा
हिन्दुस्तान हमारा ●

Scanned with AnyScanner

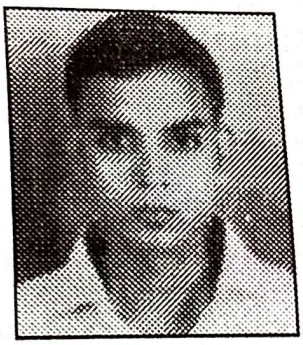
हम युवा

श्री रंजन कुमार
लेखाकार
प्रशासन-।

माना, हमारी कोई पहचान नहीं,
पर धरा की प्रतिमा हैं हम
विखेर दे जो स्वर्णीमा चारों ओर
उस सुबह की बेला हैं हम।
माना हमारी कोई पहचान नहीं
पर भरी है दिव्य शालीनता हममें
टकरा गये तो झुकेगें नहीं हम
चाहे कितनी भी विपदायें आये।
माना हमारी कोई पहचान नहीं।
पर वतन की शान हैं हम।
फैला दें शांति चारों ओर,
कबीर के 'प्रेम ' के रखवाले हैं हम
माना हमारी कोई पहचान नहीं
दर बदलते वक्त के रश्मि पुंज हैं हम।
हृदय है दृढ़ निश्चयी , मन है अविचल
इस युग के बनेंगे शिरोमणि हम। ●

Scanned with AnyScanner

भिक्षुक



विधू शेखर
सुपुत्र–श्री अनिरूद्ध राय
पर्यवेक्षक

कातर नयन लिये
दया पाने को,
वो खड़ा, फटे• हाल।
न वस्त्र, न उसके अंश,
फिर भी,
अनवरत
एक हाथ फैलाये
बरबस सभी को,
अपनी ओर बुलाये।
क्या जेठ, क्या भादो ?
उसे तो अपने जीवन में,
वसंत आने का इंतजार ।
बस इसी इंतजार ,
के सहारे ,
काट डालेगा वह,
जीवन के सारे साल।

Scanned with AnyScanner

एक अविस्मरणीय यात्रा

''बार-बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की, सबसे मस्त खुशी मेरी।''



चन्दशेखर
सुपुत्र : श्री अनिरूद्ध राय
पर्यवेक्षक

मानो बात कल की हो, जो मुझे उतनी ही रोमांचित करती है जितनी इसने मुझे स्कूल के दिनों में किया था। मै उस समय नेतरहाट विधालय के 10वीं कक्षा में अध्ययनरत था। किशोर जीवन अनिश्चितताओं से भरा होता है और इन्हीं अनिश्चितताओं के मध्य मेरे छह मित्रों ने एक निश्चित फैसला किया। हम सबों ने विधालय डंप कर 13 कि0मी0 दूर स्थित ''लोअर घाघरी जल प्रपात जाने का फैसला किया। बस फिर क्या था, बैग के किताब मेज पर व मेज के अमरूद, सतालू व पपीता बैग में। जंगल का सफर, जंगली जानवरों का डर व बची -खुशी कसर वीरान व सूनापन ने कर डाला। वैसे हमने अपनी सुरक्षा के पूरे प्रबंध एक -एक पतले डंडे को लेकर लिया था।

शांत नेतरहाट में हमने लय व गति की अपनी खोज बरकरार रखा। प्रवाहमान नेतरहाट अपनी आत्मा से ही जीवंत है। यहाँ की आत्मा इसके पेड़-पौधे , झरने, इसके जंगली जानवरों व यहाँ के सुरम्य पहाड़ियों मे विद्यमान करती है। सफर मे जाने वक्त ही सबों ने बैग में रखा सुस्वाद फल व्यर्थ ढ़ोने के बजाय समाप्त कर देना ही उचित समझा । बुभुझा तो शांत हो गयी, पर जिज्ञासा विद्यमान थी। अपने लक्ष्य को लेकर।

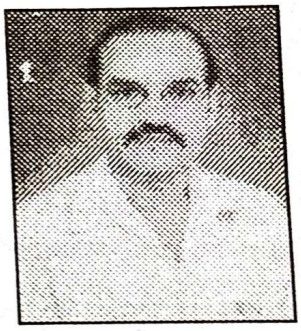
बीच-बीच में जंगल का सूनापन अलग ही काट खाने को दौड़ता था। अब रोमांच कम व डर अधिक लग रहा था। तभी बनावटी साहस का मुखौटा पहन एक मित्र ने इसे बंदरों की आहट बता कर माहौल को हल्का बनाने की कोशिश की। तब तक कल -झल की ध्वनि से वातावरण गुंजायमान हो गया था। देखते-देखते सभी लक्ष्य को भेदने को तैयार थे। अभी उल्लास व आनंद अपने चरम पर पहुँचने ही वाला था तभी एक चिल्लाहट ने हमें अपनी ओर खींचा। भागकर देखा तो मुँह खुले के खुले रह गये। हमारा एक मित्र बुरी तरह जल प्रवाह में बहता हुआ चट्टानों पर उठ व गिर रहा था। मानों सभी को साँप सूँघ गया हो तभी मैंने हिम्मत बाँधकर तौलिये के सहारे उसे एक ओर करने की कोशिश की। उस समय हमें एक तैराक मित्र की आवश्यकता महसूस हुई थी। खैर उसे कोई खास चोट नहीं आई थी।

हमें क्या मालूम कि आज मुसीबतों ने हमें घेरने की ठान ली है। हमारा एक मित्र दूसरी जगह स्तब्ध खड़ा पसीना हुये जा रहा था। तभी अचानक 30-40 बन्दरों का एक झुंड ने पेड़ों के शिखर पर खड़ा हो बेतहाशा शोर मचाने लगा। देखा तो आँखे फटी की फटी रह गयी। सामने जल प्रवाह के दूसरी ओर महज 10 मीटर की दूरी पर भालू का एक छोटा बच्चा अपनी गुफा में बैठा था। महज 10 मीटर का फासला था मौत व जीवन के बीच। हल्के कदम से पीछे हो हमलोगों ने एक बड़े चट्टान की ओर ले राहत की साँस जी। तभी एक मित्र ने धैर्य रखा और सूखे पत्ते जमा करने लगा। उसे देख हम भी उसके साथ जुट गये । उसने बुद्धिमत्तापूर्ण दो पत्थरों के टुकड़ों को रगड़ कर चिनगारी निकाली और देखते -देखते वहाँ आग की लपटे धधकने लगी। फिर क्या था एक साँस में हमने जो दौड़ (स्पिंट) लगायी सीधे हमारे कदम बस्ती आने पर ही रूकें। सभी भौंचक व एक -दूसरे को निहारते हुए अपनी स्तब्धता को हमने हंसी के जोर-जोर के ठहाकों से तोड़ा।

जिस रोमांच से हमने अपनी यात्रा शुरू की थी अब वह डर मिश्रित रोमांच में तब्दील हो चुकी थी। हाँ, यह भी सही है कि वह किशोर ही कैसा, जिसके पाँव न फिसले हो। इसी फिसलन से जीवन को उर्जा मिलती है। ●

Scanned with AnyScanner

"दर्द औरों का मुझसे सहा नहीं जाता"



श्री शिव शंकर तिवारी
वरीय लेखाकार

दर्द औरों का , मुझसे सहा नहीं जाता,
जीवन के मुश्किल सफर से मुख मोड़ा नहीं जाता।
दर्द औरों का .....
समय की दौड़ में, मशीनों की होड़ में,
कोयल की कूक को, जिन्दगी की हूक को
नकारा नहीं जाता।
दर्द औरों का .....
लम्बे सफर में, जिन्दगी की डगर पे,
अनेक यार मिलेंगे।
पर कपटी यार से , दिल लगाया नही जाता।
दर्द औरों का .....
मिथ्या जगत से क्या करूँ दिल लगाकर ?
अपितु! दिलदार यार से मुँह मोड़ा नहीं जाता।
दर्द औरों का .....
कयामत के क्षण में , व पीड़ित मन में
सुख और सच्चाई का , बयाँ किया नहीं जाता।
दर्द औरों का .....
अपनी जिन्दगी की दास्ताँ, मैं क्या बयाँ करूँ?
गुजरे हुए लम्हों को , भुलाया नही जाता।
दर्द औरों का .....
जिन्दगी में, गर कुछ कर गुजरने का जज्बा हो
तो समय को व्यर्थ गँवाया नहीं जाता।
दर्द औरों का .....
ऐ! परवरदिगार, तू इतनी सी, रहम कर, मुझपर
की स्नेहिल प्यार, व्यथितों को लूटा सकूँ
क्योंकि पिड़ीतो के अश्रु मोती यूँ ही गँवाया नहीं जाता।
दर्द औरों का ..... ●

Scanned with AnyScanner

'घृत कुमारी'- बहुत गुणकारी पौधा



वैद्य डा0 रामेश्वर राम
वरीय लेखाकार

परिचयः- 'घृत कुमारी' गुच्छेदार पौधा होता है, इसकी हरी पत्तियों में गुदा भरा रहता है। इसकी उँचाई 3 से 4 फीट होती है।

इस पौधे के निम्नलिखित गुण हैः-

1. घृत कुमारी' का सेवन पेट के विकारों को दूर भगाता है।

   घृत कुमारी' के 10 गुद्देदार पत्तों को कांच के वर्तन में डालक 10 से 15 दिन तक धूप में रखो और बीच बीच में हिला दें यह पत्ता द्रव बना जायेगा तब आप रोज भोजन के बाद दो चम्मच सेवन कर सकते है।

2. ज्यादा उम्र हो जाने पर थोड़ा ज्यादा शारीरिक एवं मानसिक कार्य करने के बाद शरीर थका-थका सा रहता है। इसके सेवन करने से जीवन शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

3. यह शरीर में होने वाले हारमोन रस को बढ़ाता है।

4. 'घृत कुमारी' कान दर्द में भी लाभकारी है। इसे इस्तेमाल करने के लिए घृत कुमारी के गुदा को थोड़ा गरम कर लें और जिस कान में दर्द हो उसमें डालकर दूसरे कान में डालने से कान का दर्द ठीक हो जायेगा।

5. किसी बच्चे को पेट में गैस भर गया है । पैखाना सूख गया हो। पैखाना नहीं होने से पेट में बहुत मरोड़ व दर्द हो रहा हो, तो घृत कुमारी का गुदा उस बच्चे के नाभी के अगल-बगल लेप करने से सूखा हुआ पैखाना हो जायेगा और पेट का दर्द ठीक हो जायेगा।

6. खाँसी में घृत कुमारी को गरम कर उसमें नमक और काली मिर्च लगाकर चूसे तो खाँसी ठीक हो जायेगा।

7. अगर किसी महिला के स्तन के अगल-बगल गाँठ हो गया हो जो आगे चलकर कैंसर का रूप धारण कर लेता है, तो घृत कुमारी का एक छोटा पत्ता काट लें उस पत्ते को एक तरफ का छिलका नया ब्लेड से हटा ले। उसके बाद महिला के स्तन के पास गांठ पर ठीक से बांध दें तो गांठ, गिलटी ठीक हो जायेगा।

Scanned with AnyScanner

8. यदि किसी पुरूष के किसी भी अंग पर गांठ या गिलटी हो गया हो तो इसके पत्ते को छोटा टुकड़ा लेकर उसके एक तरफ का परत नया ब्लेड से हटाकर उस गिलटी पर बांधने से गिलटी गल कर ठीक जायेगा।

9. कमर दर्द में लाभकारी –घृत कुमारी के गुद्देदार पत्तों को पीस लें और आटा में मिलाकर गूंथ कर रोटी बनाकर खायें तो कमर दर्द ठीक हो जायेगा।

10. रात में जो बच्चे विछावन पर पेशाब कर देते हैं उन्हें घृत कुमारी के पत्ते काला तिल एवं गुड़ में मिलाकर लड्डू बनाकर खिलावें तो रात में विछावन पर शू-शू नहीं करेगें।

11. खुजली में लाभकारी –'घृत कुमारी' का छोटा छोटा पत्ता नारियल तेल में मिलाकर धीमी आँच में गरम करें और कड़ाही उतार कर ठंढा हो जाने पर उसमें कपूर मिला दे। उसके बाद खुजली वाले स्थान पर या अन्य चर्म रोगों पर लगाने से लाभ होगा।

12. गठिया के रोगी 'घृत कुमारी' के पत्तो को थोड़ा गरम करके ठेहुना पर पट्टी बांधे तो गठिया ठीक होगा।

13. किसी महिला को बहुत ज्यादा ब्लीडिंग (खून स्त्राव) हो रहा हो तो इसके पत्ता को साफ कर नया ब्लेड से एक तरफ का परत हटाकर पट्टी बांधने से ब्लीडिंग रूक जाएगी।

14. यदि किसी पुरूष को खूनी बवासीर हो तो इसके पत्ते को एक तरफ छिल कर हटाकर गुदाद्वार पर रखकर बांधे। ●

Scanned with AnyScanner

बिहार का गौरवमय इतिहास



संदीप कुमार
सुपुत्र-श्री विनोद साह
लेखा अधिकारी

बिहार के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखंड, पूर्व में पश्चिम बंगाल, दक्षिण-पश्चिम में छत्तीसगढ़ तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित है । यह भारत के उत्तरी पूर्वी भाग में स्थित है । इसका प्राचीन इतिहास वैदिक काल से प्रारंभ होता है। इसका उल्लेख वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत, महाकाव्यों आदि में अनेकशः आया है । रामायण काल में राजा जनक मिथिला के राजा थे और रामचन्द्र जी ने बक्सर के समीप गुरूकुल में ऋषि विश्वामित्र से शिक्षा ग्रहण की थी । 16 महाजन पदों में सबसे शक्तिशाली मगध महाजन पद बिहार में ही था, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र या वर्तमान में पटना थी। मगध राज्य में ही गौतमबुद्ध ने बोधगया में बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया था और जैनधर्म के 24 तीर्थकरों की कर्मभूमि भी यहीं थी । वैशाली, मिथिला आदि यहीं के गणराज्य थे । पाटलिपुत्र के किले का निर्माण मौर्यवंश के अजातशत्रु द्वारा कराया गया था । सम्राट अशोक (273-232 ई0पू0) ने यहाँ शासन किया । जिसने, कलिंग पर चढ़ाई की एवं विजयोपरान्त बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए एवं बौद्धधर्म के प्रचार हेतु अपने पुत्र एवं पुत्री को विदेशों में भेजा था । गुप्त, पाल आदि वंशों का शासन भी मगध पर रहा ।

11वीं शताब्दी से लेकर मध्य 18वीं शताब्दी तक बिहार गुलाम, लोदी एवं मुगल वंश के शासकों के अधीन रहा । 1765 के बक्सर के निर्णायक युद्ध के पश्चात् बिहार पर अंग्रेजी प्रभुत्व स्थापित होना प्रारंभ हुआ। स्वतंत्रता-आंदोलन के समय यहाँ अनेक विद्रोह हुए जिनमें चम्पारण, कोल आदि प्रमुख हैं । 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में जगदीशपुर रियासत के बाबू वीर कुंअर सिंह ने खुलकर विद्रोहियों का साथ दिया । 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की भूमिका महत्वपूर्ण रही ।

वर्तमान बिहार राज्य की स्थापना 12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली में आयोजित शाही दरबार में सम्राट द्वारा बिहार और उड़ीसा को मिलाकर बिहार प्रान्त बनाने की घोषणा की गयी, जिसके परिणामस्वरूप 1 अप्रैल, 1912 को विधिवत बिहार प्रांत का उद्घाटन हुआ तथा पटना को इसकी राजधानी बनायी गयी। 1936 में बिहार को बंगाल तथा उड़ीसा से पृथक कर दिया गया । 1956 ई0 में राज्यों के पुनर्गठन के समय बिहार की सीमाओं में परिवर्तन किया गया । उस समय बिहार में चार प्रमंडल एवं 17 जिले थे । बाद में 1972-73 में राज्य का दुबारा पुनर्गठन किया गया और 5 प्रमंडल तथा 33 जिले बनाये गये । 15 नवंबर, 2000 को

Scanned with AnyScanner

प्रदेश का पुनर्गठन कर दक्षिणी बिहार को पृथक करते हुए झारखंड राज्य का गठन किया गया । वर्त्तमान में यहाँ 9 प्रमंडल एवं 37 जिले हैं ।

यहाँ के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक, भगवान महावीर, गुरू गोविन्द सिंह, शेरशाह सूरी, वीर कुंवर सिंह, डॉ0 सच्चिदानन्द सिन्हा, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, वशिष्ठ नारायण सिंह आदि उल्लेखनीय है । यहाँ की प्रमुख नदियों में सरयू (घाघरा), गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कमला, बलान, कोशी, महानंदा, गंगा, सोन, चानन, पुनपुन, फल्गु आदि हैं । कोशी नदी को बिहार का शाप माना गया है। कोशी नदी में ऊफान आने से बाढ़ की भयावह स्थिति पैदा हो जाती है एवं बिहार में तबाही आ जाती है। बिहार का पर्यटन आकर्षण में पटना, पाटलिपुत्र अथवा पुष्पपुरी हरमंदिर साहिब गुरूद्वारा, गोलघर, खुदाबख्श खाँ पुस्तकालय, शहीद स्मारक, पटना संग्रहालय, गाँधीघाट, लक्ष्मी नारायण मंदिर, बिड़ला मंदिर, सदाकत आश्रम, सोनपुर का मेला, कुम्हरार गाँव, गया, बौद्धगया, वैशाली, नालंदा, राजगीर, पावापुरी, शेरशाह सूरी का किला एवं मकबरा (सासाराम) आदि प्रमुख हैं ।

बिहार का राजकीय पशु रीछ एवं राजकीय पक्षी नक्ता है ।

यहाँ के निवासी मुख्यतः हिन्दी, उर्दू, मैथिली, मगही एवं भोजपुरी बोलते हैं।

बिहार की गिनती पिछड़े राज्यों में नहीं रही । यहाँ के छात्र मेधा में किसी राज्य से कम नहीं है । वर्तमान राज्य सरकार के नेतृत्व में बिहार विकास की सीढ़ी चढ़ चुका है । यहाँ पर इंजिनियरिंग, प्रबंधन, विधि आदि की पढ़ाई राष्ट्रीय स्तर की होती है । बिहार में इस वर्ष से आई0आई0टी0 की पढ़ाई शुरू हो चुकी है । अगले वर्ष में आई0आई0एम0 स्तरीय प्रबंधन की पढ़ाई एवं निफ्ट (एन.आई.एफ.टी.) भी यहाँ आरंभ हो रही है। राष्ट्रीय स्तर की विधि की पढ़ाई भी बिहार में शुरू हो जायेगी। राष्ट्रीय राजमार्ग का कार्य भी प्रगति पर है। अब हम नये विकसित बिहार की कल्पना ही नहीं कर सकते, बल्कि कुछ वर्षों में बिहार विकसित राज्यों की श्रेणी में खड़ा होगा । ●

Scanned with AnyScanner

"कुछ पेड़ लगा लो"

श्री सुनील कुमार वर्मा
लेखा-अधिकारी

भाग दौड़ की जिन्दगी से थोड़ा
वक्त निकालो और कुछ पेड़
लगा लो ।
प्रदूषण की भयंकरता से समाज
को बचा लो और कुछ पेड़
लगा लो ।
वीरान भूमि को फिर से लहलहा
बना दो और कुछ पेड़
लगा लो ।
बाढ़ की विभीषिका से समाज
को बचा लो और कुछ पेड़
लगा लो ।
पटना के सम्पूर्ण क्षेत्र को उन्नत
उद्यान बना दो और कुछ पेड़
लगा लो ।
आने वाली पीढ़ियों का जीवन सुगम
बना लो और कुछ पेड़
लगा लो ।
पेड़ लगा देना हीं जीवन का
लक्ष्य बना लो और कुछ पेड़
लगा लो । ●

Scanned with AnyScanner

सपना

श्री मनमीत कुमार,
वरीय लेखा अधिकारी

रात के करीब एक बज रहे थे । सौरभ आँखे बंद कर के लेटा था। वह गए वस्तुओं को याद कर रहा था ।. लेकिन, यह स्पष्ट था कि वह काफी बीमार था । आँखों के चारो ओर काले घेरी ने डेरा जमा लिया था। अचानक उसकी साँसें तेज चलने लगी और वह हाफने लगा । वह उठा और एक लंबी खून की उल्टी की । वह चिल्लाया ''समीर'' जो उसके बगल वाले पलंग पर सोया था और उसका काफी अच्छा मित्र था। समीर घबराकर उठा और उसकी नजर जमीन पर पड़े खून की ओर गई । तुरंत उसने सौरभ को अपना सहारा दिया । सौरभ की आँखें नम थी और चेहरे पर निराशा का भाव था । उसने समीर से कहा ''शायद मै डॉक्टर नहीं बन पाउँगा और न ही कभी अपने माता-पिता का सपना पूरा कर पाउँगा । कहते-कहते उसकी आँखो से आँसुओं की अविरल धारा बहने लगी । समीर ने उसका हौसला बढाते हुए कहा ''नहीं तुम्हे डॉक्टर बनना है । जिस सपना को पूरा करने के लिए तुम इतना हिम्मत किए हो वह टूट नहीं सकता । तुम अपने माता-पिता के उम्मीदों पे जरूर खड़े उतरोगे ।'' सौरभ अचानक लगभग चिल्ला उठा। ''अगर पापा को पता चल गया कि मुझे कैंसर है तो वो मुझे तुरंत ले जाएगें । तुम लोगो ने मुझे जो सहयोग तथा हिम्मत दिया हे उसके सहारे मै डॉक्टर जरूर बनूँगा । बस मेरे पिता जी को मेरी बिमारी के बारे में खबर नहीं मिलनी चाहिए ।'' सौरभ का दर्द बढ़ता ही जा रहा था । समीर ने उसे पेन किलर दिया और वह सो गया । सौरभ के पिता एक प्राइवेट कम्पनी में लेखा का काम देखते थे । वेतन इतना था कि घर ठीक से चल रहा था। उनका नाम मुकुल था । मुकुल बाबू को दो लड़की और एक लड़का था । सौरभ सबसे छोटा लड़का था।

मुकुल बाबू के पिता का एक ही सपना था कि उनका बेटा डॉक्टर बन सके । वे अपने बेटे को पढ़ाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार थे, पर वे भूल गए थे कि समय किसी के हाथ में नहीं है । समय किसी के इच्छा-अनुसार नहीं चलता है । मुकुल बाबू जब सिर्फ बारह साल के थे समय ने उससे उनके पिता को छीन लिया । मुकुल बाबू कभी डॉक्टर तो नहीं बन पाए पर डॉक्टर का सुरूर उनके दिलो-दिमाग पर छा गया । उन्होने सोच रखा था कि वे अपने बेटे को डॉक्टर बनाकर अपने पिता का सपना जरूर पूरा करेंगे ।

सौरभ धीरे-धीरे बड़ा होता गया । सौरभ यह महसूस करने लगा कि उसके पिता जी जब किसी डॉक्टर को देखते थे उनके आँखों मे अजब सी चमक आ जाती थी और उस डॉक्टर को सौरभ में देखते थे । समय के साथ सौरभ ने ठान लिया था वह अपने पिता जी के सपने को जरूर पूरा करेगा।

सौरभ दिन-रात एक करके जी जान लगाकर पढ़ने लगा । देखते-ही- देखते वह समय आ गया जिसका मुकुल बाबू को वर्षो से इन्तजार था । सौरभ को एम0बी0बी0एस0 के लिए चुन लिया गया । उस दिन मुकुल बाबू अपने पिता के तस्वीर के सामने जाकर फूट-फूट कर रोने लगे और कहने लगे देखिए आपके सपनो को मैने पूरा कर दिया । सौरभ डॉक्टर बनने वाला है । उस दिन मुकुल बाबू ने पुरे मुहल्ले में मिठाइयाँ बँटवाई ।

Scanned with AnyScanner

सौरभ की पढ़ाई ठीक से चल रही थी । जब वह एम0बी0बी0एस0 के अंतिम वर्ष में पहुँचा तो उसकी तबियत खराब रहने लगी । समय के साथ बिमारी बढ़ती ही जा रही थी । जाँच से पता चला की उसे कैंसर है । सौरभ पर मानो आसमान टूट गया। उसे अपना मौत नहीं दिख रहा था, बल्कि अपने पिता जी का सपना टूटता दिख रहा था। लेकिन, उसने हिम्मत नहीं हारा।

सुबह के आठ बज रहे थे । सौरभ की नींद टूटी तो उसने अपने आप को अपने दोस्तों के बीच घिरा पाया । आज एम0बी0बी0एस0 का अंतिम पेपर था । दोस्तों ने उसे तैयार किया । सौरभ आज अपना अंतिम परीक्षा दे रहा था। किसी तरह उसने पेपर पूरा किया । फिर दोस्तो ने उसे वापस होस्टल पहुँचाया । सौरभ का मोबाइल बजने लगा । पिता जी का फोन आया था । सौरभ के आँखो में आँसू तैरने लगे । उसने फोन उठाकर कहा–''पापा मैने अंतिम पेपर दे दिया है । उम्मीद है कि मै पास कर जाउँगा ।'' यह कहकर उसने फोन रख दिया । अब वह आराम करना चाहता था।

उधर मुकुल बाबू बहुत खुश थे । उनका वर्षो पुराना सपना पूरा होने वाला था। उन्होने अपनी सारी खुशी सौरभ की पढ़ाई के लिए बलिदान कर दी थी ।

सौरभ की हालत दिन–प्रतिदिन खराब होने लगी । सभी दोस्तों ने उसकी सेवा करने में दिन रात एक कर दी । पर, समय ने सौरभ का साथ छोड़ना शुरू कर दिया था । उसका एक ही अरमान था कि बस एक बार डॉक्टर बन कर घर पहुँच जाए। आखिरकार वह दिन आ ही गया । एम० बी0बी0एस0 का रिजल्ट निकल गया। सौरभ पास कर गया था । उसने तुरन्त अपने पिता जी को फोन कर के खुशखबरी दी । उसने कहा –''मैं कल सुबह को घर पहुँच जाउँगा ।'' अचानक उसकी सांसे तेज चलने लगी और वह फोन रख दिया ।

इधर मुकुल बाबू काफी खुश थे और क्यों न हों, आखिरकार उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा अरमान पूरा हो गया था । वे तुरंत घर से निकले और पूरे मुहल्ले को यह खबर दी । फिर वे नेम प्लेट बनवाने के लिए गए और अपने पसंद का नेम प्लेट बनवाया, जिसपर लिखा था ''डा0सौरभ'' । रात भर पूरे परिवार को नींद न आई। सुबह आठ बजे सौरभ आने वाला था । किसी तरह रात कटी और सुबह हुआ । सुबह को मुकुल बाबू ने हथौड़ी और कुछ कांटी लिए और चल परे दरवाजे पर नेम प्लेट लगाने। अंततः उन्होने इसमें सफलता प्राप्त कर ही ली । ''डा0सौरभ'' का नेम पलेट लगाकर वे उसे देखने लगे । आठ बज चुके थे । पुरा परिवार बाहर सौरभ का इंतजार कर रहा था ।

अचानक रोड पर एक एम्बुलेंस दिखाई दिया । ऐम्बुलेंस घर के दरवाजे पर आकर रूक गया । मुकुल बाबू तथा कुछ और लोग भी वहाँ आ गए । सौरभ को स्ट्रेचर से उतारा गया । सौरभ की आँखें बंद थी । मुकुल बाबू का दिमाग काम नहीं कर रहा था । वे चिल्ला उठे ''यह नहीं हो सकता'' । सौरभ ने धीरे से आँखें खोली। उसकी नजर नेम प्लेट पर पड़ी । उसने उसे ध्यान से पढ़ा ''डा0सौरभ'' । पहली बार उसकी आँखो में असीम शान्ति नजर आई । वह धीरे से बोला ''पापा, मैं डॉक्टर बन गया'' । फिर उसकी आँख हमेशा के लिए बंद हो गई । घर से रोने की आवाज तेज होती जा रही थी । मुकुल बाबू को जैसे काठ मार गया था। उनकी नजर नेम प्लेट पर गई जिसपर लिखा था– ''डा0 सौरभ'' !!!!! ●

Scanned with AnyScanner

अगस्त का पेड़



वैद्य डा0 रामेश्वर राम
वरीय लेखाकार

परिचयः- अगस्त का पेड़ 10 से 15 फीट उँचा होता है। इसकी टहनियों पर अक्टूबर, नवम्बर से फरवरी के बीच उजला फूल लगता है। इसके फुल का पकौड़ी बहुत स्वादिष्ट लगता है।

गुणः-

1. अफरा (अपच)- जब छोटा बच्चा दूध पीने पर उल्टी कर देता है तब अगस्त का 2 फुल मसलकर एक चम्मच रस उस बच्चे को पिलाने पर बच्चे को एक या दो दस्त होगा। उसके बाद उसका अफरा (अपच) ठीक हो जायेगा।
2. अत्यधिक कमजोरी- धातु रोग, शारीरिक यौन दुर्बलता हो जाने पर अगस्त फुल का गुलकन्द बनाकर सुबह-शाम खाने से यौन दुर्बलता, दिल -दिमाग और पेट ठीक हो जाता है।
3. अगस्त के सूखे फूल का पाउडर एक चम्मच दूध के साथ सुबह -शाम खाने से प्रदर रोग ठीक हो जाता है।
4. आँख लाल होने पर या आँख में दर्द होने पर अगस्त की पत्तियों को मसलकर उसका रस दो बूँद आँख में डालने से आँख का दर्द, लालीपन ठीक होते देखा गया है।
5. माईग्रेन पेन (अधकपारी रोग)- यदि सिर के बाये हिस्सा में दर्द बना रहता है तो अगस्त की पत्तियों को मसलकर उसका रस 4 बूंद दायें नाक में डालने से लाभ होता है। यदि सिर के दायें भाग में काफी दर्द रहता है तो अगस्त की पत्तियों का रस बायें नाक में 4 बूंद डालने से लाभ होता है।
6. साईनस होने पर अगस्त की पत्तियों को मसलकर रस निकाल लें और रुई की फाहा को तरकर जो नाक बंद, जाम रहता है उसमें 5 बूँद टपकाने से साईनस रोग ठीक होता है।

यह बहुत शुभकारी पेड़ है। इसे घर के सामने लगाने पर निगेटिव ऊर्जा दूर होकर पोजिटिव ऊर्जा घर में आने लगता है। घर में सुख, शान्ति बना रहता है। ●

Scanned with AnyScanner

हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2007: एक सिंहावलोकन

हिन्दी कक्ष

राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक के कार्यालय से प्राप्त दिशा निर्देश के अनुपालन में इस वर्ष भी महालेखाकार के कार्यालय 'महालेखाकार भवन' में हिन्दी पखवारा का सफल आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), बिहार, पटना एवं महालेखाकार (ले0एवं ह0), बिहार, पटना के संयुक्त तत्वाधान में सम्पन्न किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह का शुभारम्भ (1.9.07 एवं 2.9.07 के शनिवार एवं रविवार होने के कारण) दिनांक 03.09.07 को 11.30 बजे पूर्वाह्न में माननीय प्रधान महालेखाकार(ले0 प0) श्री अरूण कुमार सिंह के कर कमलों से दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। स्वागत भाषण श्री रमेश प्रसाद कंठ, कल्याण अधिकारी ने किया। प्रधान महालेखाकार महोदय ने हिन्दी पखवाड़ा के औचित्य एवं राजभाषा हिन्दी की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस पुनीत अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से समस्त कार्यालयीय कार्यो का निष्पादन हिन्दी में ही करने की अपील की। तत्पश्चात् श्री महेन्द्र झा ने साहित्यिक गीतो का गान कर सबों को मंत्र मुग्ध कर दिया। पहले दिन के कार्यक्रम के समापन पर श्री अमिताभ प्रसाद, उप महालेखाकार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दिनांक 05.09.07 से 13.09.07 तक हिन्दी कार्यशाला एवं विभिन्न प्रतियोगिताएँ यथा हिन्दी प्रश्नोतरी प्रतियोगिता, कम्प्युटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, हिन्दी संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, स्वरचित काब्य –पाठ प्रतियोगिता, का सफल आयोजन किया गया। दिनांक 13.09.07 को सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया ।

दिनांक 14.09.07 को 'हिन्दी दिवस' समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार श्री अरूण कुमार सिंह ने की। स्वागत–भाषण श्री कैलाश राम, उप महालेखाकार द्वारा दिया गया । तत्पश्चात हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में प्राप्त माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के संदेश का वाचन श्री डी0 जय शंकर, उप महालेखाकार (प्रशासन), लेखा परीक्षा ने किया। प्रधान महालेखाकार श्री अरूण कुमार सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के प्रचार –प्रसार एवं उपयोग पर विशेष बल दिया। कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के उन्नीसवें अंक का लोकार्पण भी इस अवसर पर किया गया। साथ ही हिन्दी प्रगति के वार्षिक प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण भी किया गया।

हिन्दी दिवस समारोह के द्वितीय चरण में भव्य कवि –गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कवि गोष्ठी में आमंत्रित कविवृन्द श्री आलोक धन्वा, श्री अरूण कमल, श्री मेहता नागेन्द्र सिंह, श्री नन्द किशोर शर्मा, श्री घनश्याम, श्री सत्य नारायण, श्री कमला प्रसाद, श्री ललित कुमुद, श्रीमती सुभद्रा वीरेन्द्र, श्री इन्द्रमोहन मिश्र 'महफिल' , श्री नरेन्द्र सिंह 'नाहर', श्री रामचन्द्र लाल कर्ण, श्री मनोज कुमार, श्री उदय चन्द झा 'विनोद' एवं श्री महेन्द्र झा ने अपनी कविता पाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रोताओं ने भी तालियों सी गड़गड़ाहट से कवियों का मान सम्मान किया। कवि मंच की अध्यक्षता लोकप्रिय कवि समालोचक डा0 खगेन्द्र ठाकुर ने की तथा मंच संचालन प्रसिद्ध साहित्यकार एवं उद्घोषक श्री सत्य नारायण ने की।

समारोह के अन्त में वरीय उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री उदय शंकर प्रसाद ने समारोह को सफल बनाने में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा सादर आमंत्रित कवियों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

Scanned with AnyScanner



श्री खगेन्द्र ठाकुर द्वारा "चेतना" के उन्नीसवें अंक का विमोचन । साथ में प्रधान महालेखाकार (ले०प०) श्री अरूण कुमार सिंह एवं महालेखाकार (ले० एवं हक०) श्री गौतम गुहा एवं अन्य ।



महालेखाकार (ले० एवं हक०), बिहार, पटना
श्री गौतम गुहा द्वारा भावोद्गार

Scanned with AnyScanner